



facebook.com/
thebharatshri



twitter.com/
thebharatshri



website
thebharatshri



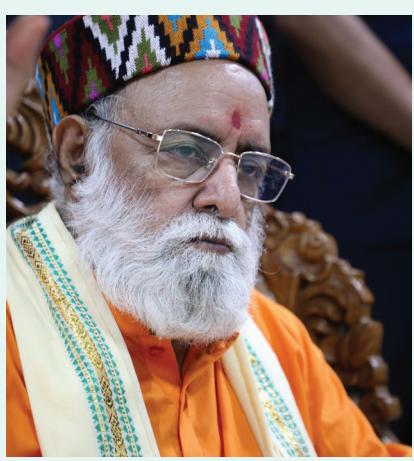
राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 05 मई 2025 • वर्ष 6 • अंक 41 • मूल्य: 5 रुपए

क्या आपका मेल धरती को...



परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि एक बार भगवान श्रीकृष्ण से अर्जुन ने पूछा, “संत के दर्शन से क्या लाभ होता है?” भगवान श्रीकृष्ण ने इतर दिया, “तुम कौवे से जाकर यह ग्रन्थ पूछो कि संत के दर्शन से क्या लाभ होता है!”

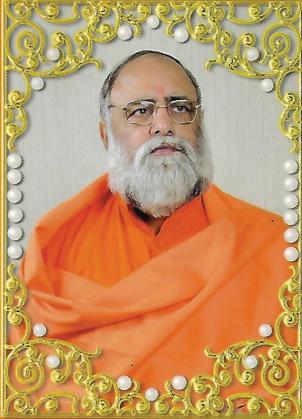
पेज़-10-11



भारत पर पाकिस्तानी साइबर हमला

पाकिस्तान ने फिर की भारत में घुसपैठ की कोशिश

सद्गुरु वाणी



धार्मिक होने का मतलब है सबसे प्रेम और करुणा का भाव रखना। पृथ्वी और नफरत का धर्म में इसका कोई स्थान नहीं है।

आज धर्म के नाम पर जो भी झगड़े हो रहे हैं वे केवल तथाकथित गुरुओं द्वारा व्यक्तिगत रूप से कराए गए हैं जबकि धर्म का झगड़ा से कोई लेना-देना नहीं है।

जो भी व्यक्ति दिव्य पाठ से अपने तन, मन और धन के कष्टों से मुक्त होता है उसमें मेरी कोई भूमिका नहीं है। साक्षात परमात्मा ही आपके कष्टों का निवारण करते हैं।

@ भारतश्री व्यूरो

पाकिस्तान की चाहत क्या है ये बिल्कुल साफ नहीं हो पा रही है। सोमवार सुबह भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा पर BSF ने पाकिस्तानी नागरिक को अरेस्ट किया है। ये पाकिस्तानी नागरिक दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद तब अरेस्ट हुआ जब भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ा हुआ है। इस बीच, पाकिस्तान से जुड़े हैंकर्स भारतीय संस्थानों को निशाना बनाने में जुटे हुए हैं। सोमवार को ‘पाकिस्तान साइबर फोर्स’ नामक एक ट्रिवर अकाउंट ने दावा किया कि उसने भारतीय सैन्य इंजीनियरिंग सेवा और मनोहर परिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (MP-IDSA) से जुड़ा संवेदनशील डाटा चुराया है।

एवीएनएल की वेबसाइट पर
पाकिस्तान का झंडा

हैकर्स ने रक्षा मंत्रालय के अधीन काम करने वाली सरकारी कंपनी आर्म्ड व्हीकल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (AVNL)



की आधिकारिक वेबसाइट को हैक करने की कोशिश की। वेबसाइट पर पाकिस्तान का झंडा और ‘अल खालिद’ टैक की तस्वीरें दिखाई दीं। इस घटना के बाद, सुरक्षा कारणों से AVNL की वेबसाइट को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया है, ताकि पूरी जांच की जा सके और नुकसान का आकलन किया जा सके।

साइबर सुरक्षा एजेंसियाँ हैं सक्रिय

इस घटना के बाद, भारतीय साइबर सुरक्षा एजेंसियाँ और विशेषज्ञ इंटरनेट पर पाकिस्तान से जुड़े संभावित हमलों पर नजर रख रहे हैं। सरकार और संबंधित एजेंसियाँ साइबर सुरक्षा को और मजबूत करने में जुटी हैं, ताकि भविष्य में इस तरह के हमलों को रोका जा सके और देश के डिजिटल

और ट्रांसपोर्टेशन सेक्टर रहे हैं। इन हमलों में अधिकांश पाकिस्तान से हुए हैं, जबकि कुछ हमले बांग्लादेश, मोरक्को और मध्य पूर्वी देशों से भी हुए हैं। हैकर्स ने संवेदनशील डेटा चुराने और जासूसी करने के इरादे से नेशनल सिक्योरिटी में सेंध लगाने की कोशिश की।

तेजी से हो रहे साइबर अटैक

भारतीय सेना की आधिकारिक वेबसाइट पूरी तरह सुरक्षित है, लेकिन हैकर्स अपने प्रयास जारी रखे हुए हैं। पिछले गुरुवार को आर्मी पब्लिक स्कूल नगरोता और आर्मी पब्लिक स्कूल शुंजुवा की वेबसाइट को हैक करने की कोशिश की गई थी। इन दोनों वेबसाइट्स को पाकिस्तानी हैकर्स ने हैक करने की कोशिश की और वेबसाइट्स को पहलगाम आतंकी हमले के पीड़ितों का मजाक उड़ाने वाले मैसेज के साथ डीफेस किया था। साइबर अटैक की कोशिश पाक स्थित है कर ग्रुप ‘Cyber Group HOAX1337’ और ‘National Cyber Crew’ ने की, लेकिन वे इसमें सफल नहीं हो सके।

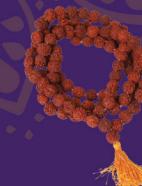


ORDER ALL TYPES OF :

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



दिल्ली में शिक्षा माफिया पर सर्जिकल स्ट्राइक अब स्कूल नहीं बढ़ा सकेंगे मनमानी फीस

@ आनंद मीणा

दि

ल्ली देश की राजधानी है। यहां ज्यादातर मिडल क्लास लोग रहते हैं। कई लोग बाहर से भी नौकरी की तलाश में यहां आए हुए हैं। ऐसे में दिल्ली की महंगाई, घर का किराया और अन्य खर्चों का बोझ पहले से ही बहुत होता है। ऊपर से पिछले कई सालों से दिल्ली में शिक्षा का व्यवसाय बड़े पैमाने पर फैल चुका है, जहां प्राइवेट स्कूल मनमाने ढंग से फीस वसूल रहे हैं। बात यहां तक पहुंच गई है कि एलकेजी या नरसरी जैसे छोटे-छोटे क्लासेस में भी पूरे साल की फीस दो से ढाई लाख रुपये तक पहुंच गई है। यह मुद्दा पिछली सरकार में भी बड़ा था और मौजूदा सरकार में भी इस पर लगातार आंतरिक समीक्षा हो रही थी।

यह बात भी जरूरी है कि शिक्षा का अधिकार सभी के लिए है। बच्चों को शिक्षा से वंचित नहीं किया जा सकता, और मनमाने तरीके से फीस बढ़ाना कहीं न कहीं शिक्षा के अधिकार का उल्लंघन है। कई बार लोग इसके खिलाफ सड़कों पर उतरे, विरोध प्रदर्शन हुए, सोशल मीडिया पर आवाजें उठीं, लेकिन अब जाकर सरकार ने इस पर एक ठोस कदम उठाया है।

दिल्ली स्कूल एजुकेशन ट्रांसफरेंसी इन फिक्सेशन एंड रेगुलेशन ऑफ फी बिल 2025 नाम थोड़ा लंबा है लेकिन मकसद साफ है। अगर यह कानून बन गया, तो प्राइवेट स्कूल अब मनमाने ढंग से फीस नहीं बढ़ा सकेंगे। उन्हें हर खर्च का हिसाब देना होगा। अब तक दिल्ली में जो कानून चल रहा था, वह था दिल्ली स्कूल एजुकेशन एक्ट, 1973। यानी एक बहुत पुराना कानून, जिसमें कुछ खमियां थीं। स्कूल इस कानून का फायदा उठाकर तरह-तरह के बहानों से फीस वसूलते थे। इसके अलावा ऐसा कोई ठोस सिस्टम भी नहीं था, जिसमें पैरेंट्स यह पूछ सकें कि फीस क्यों और किस आधार पर बढ़ाई जा रही है।

न कोई अपील की प्रक्रिया थी, न पारदर्शिता। कई स्कूल ऐसे भी थे जो सरकार को एक तय फीस दिखाते थे लेकिन असल वसूली होती थी। दूर्योग फीस, इंफ्रास्ट्रक्चर चार्ज, डेवलपमेंट फीस, एक्टिविटी फीस जैसी अलग-अलग कैटेगरी में। बाहर से ये फीस 00 दिखती थीं, लेकिन असल में डेढ़ लाख रुपये तक का खर्च निकल आता था।

कुछ महीने पहले जब एसडीएम ने दिल्ली के कुछ स्कूलों का निरीक्षण किया, तो कई गड़बड़ीयां सामने आईं। 11 प्राइवेट स्कूलों को नोटिस जारी किया गया था। शायद आपको डीपीएस द्वारका का वह मामला याद हो, जब कुछ बच्चों को सिर्फ इसलिए लाइब्रेरी में बंद कर दिया गया था क्योंकि उनके पैरेंट्स फीस नहीं चुका पाए थे। उस समय दिल्ली हाई कोर्ट ने स्कूल को कड़ी फटकार लगाई थी। इन्हीं घटनाओं के चलते यह नया बिल सामने आया।

इस बिल को दिल्ली कैबिनेट ने पास कर दिया है और जल्द ही इसे विधानसभा में पेश किया जाएगा। यह कानून नरसरी से लेकर 12वीं तक के सभी प्राइवेट और गवर्नर्मेंट-एडेड स्कूलों पर लागू होगा। सरकार का कहना है कि इससे पारदर्शिता बढ़ेगी और अभिभावकों को यह जानने का हक मिलेगा कि आखिर फीस क्यों बढ़ रही है। इस बिल में श्री-टियर स्ट्रक्चर यानी तीन स्तरों पर काम करने वाला ढांचा रखा गया है।

सबसे पहले स्कूल स्तर पर एक फीस रेगुलेशन



कमेटी बनेगी। इसमें स्कूल के प्रिंसिपल, तीन वरिष्ठ शिक्षक और पांच अभिभावक शामिल होंगे। इन पांच में कम से कम एक महिला और दो सदस्य एसटी या ओबीसी समुदाय से होना जरूरी होगा। अगर स्कूल फीस बढ़ाना चाहता है, तो यह प्रस्ताव सबसे पहले इस कमेटी के सामने जाएगा और इसकी जांच के बाद एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जाएगी।

इसके बाद, जिला स्तर पर एक फीस अपीलेट कमेटी होगी, जिसमें जिला शिक्षा अधिकारी या वरिष्ठ अधिकारी अध्यक्ष होंगे। यहां पर कोई भी अभिभावक अपील कर सकता है। और अंत में, राज्य स्तर पर एक रिवीजन कमेटी होगी, जो पूरे राज्य के लिए अंतिम निर्णय देगी। इस कमेटी का फैसला तीन साल तक लागू रहेगा। यानी हर साल फीस बढ़ाने का खेल अब नहीं चलेगा।

बिल में कुछ खास शर्तें भी जोड़ी गई हैं:

1 कोई भी स्कूल सिर्फ तीन साल में एक बार ही फीस बढ़ा सकता है।

2 फीस बढ़ाने से पहले पूरी जानकारी स्कूल की वेबसाइट पर अपलोड करनी होगी।

3 अगर किसी स्कूल ने कमेटी की मंजूरी के बिना फीस बढ़ाई तो वह अवैध मानी जाएगी और उस पर 1 लाख तक का जुर्माना लग सकता है।

4 बार-बार नियम तोड़ने पर स्कूल की मान्यता रद्द की जा सकती है या सरकार उसे टेकओवर कर सकती है।

अब सवाल ये उठता है कि अगर कोई अभिभावक वाकई में फीस नहीं चुका पा रहा तो क्या स्कूल उसके बच्चे के साथ बुरा बर्ताव कर सकता है? इस बिल में इसका भी स्पष्ट प्रावधान है:

1 फीस न चुकाने पर भी बच्चे का एडमिशन रद्द नहीं किया जाएगा।

2 न ही उसे क्लास में आने से रोका जाएगा।

3 और न ही किसी भी तरह की मानसिक प्रताड़ना दी जाएगी।

4 बच्चों की मानसिक स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखते हुए सरकार ने इसमें सख्त रुख अपनाया है।

सरकार का कहना है कि इस बिल को तैयार करते वक्त उन्होंने देश के अलग-अलग राज्यों के सर्वश्रेष्ठ नियमों का अध्ययन किया और जो सबसे अच्छी प्रैक्टिस थी, उसे अपनाया गया। लेकिन अब असली सवाल यह है कि क्या यह बिल विधानसभा में पास होगा? क्योंकि अभी आम आदमी पार्टी इसका समर्थन नहीं कर रही है। और अगर यह कानून बन भी गया, तो क्या इसे सही ढंग से लागू किया जाएगा?

कुल मिलाकर, यह बिल पैरेंट्स के लिए उम्मीद की एक किरण है। अगर इसे सही तरीके से लागू किया गया, तो हजारों परिवारों को राहत मिल सकती है।

लेकिन जैसा कि हम जानते हैं भारत में कानून बनाना आसान है, उसे जमीन पर उतारना मुश्किल। अब देखना यह है कि क्या स्कूल इस नए सिस्टम को अपनाते हैं या फिर फीस वसूली के नए रास्ते खोज लेते हैं।



आरबीआई ने 100-200 के नोटों को लेकर किया बड़ा बदलाव

क्या अब छुट्टे में होगी आसानी?

@ अंकित कुमार

100-200 के नोटों पर आरबीआई का क्या बड़ा फैसला आया है? क्या आपने कभी सोचा है कि आरबीआई नोट छापता कैसे है? क्या एक बार में कितने भी नोट छापे जा सकते हैं?

तो अभी हाल ही में आरबीआई ने 100 और 200 के नोटों को लेकर एक बड़ा फैसला लिया है। वो फैसला क्या है, इसे हम एक उदाहरण से समझते हैं। तो मान लीजिए एक लड़के का नाम राहुल है, जो मिडिल क्लास फैमिली से आता है और एक स्टूडेंट है। हर महीने की शुरुआत में वह अपने पॉकेट मनी के लिए एटीएम से पैसे निकालने जाता है। लेकिन जब भी वह एटीएम से पैसे निकालने जाता है, उसे हर बार एक ही समस्या का सामना करना पड़ता है। लेकिन अब यह समस्या हल होने वाली है। वह कैसे? क्योंकि आरबीआई ने इसको लेकर एक बड़ा फैसला लिया है।

अब राहुल और उन जैसे कई लोगों को, जिन्हें यह दिक्कत आती है, अब यह समस्या सुलझाने वाली है।

आरबीआई ने एक संकुलर जारी किया है और साफ कहा है कि सभी बैंक और व्हाइट लेवल एटीएम ऑपरेटर अब एटीएम में 100 और 200 के नोट ज्यादा से ज्यादा डालें, वह भी रेगुलर बेसिस पर। मतलब अब हर बार बड़े नोट मिलने की जो समस्या है, वह अब कम होने वाली है। आरबीआई ने यह भी लक्ष्य निर्धारित किया है कि 30 सितंबर 2025 तक देश के करीब 75% एटीएम में कम से कम एक कैसेट ऐसा होगा जो केवल 100 या 200 के नोट ही देगा और 2026 तक यह प्रतिशत 90% तक पहुंच जाएगा। यानी कि 90% एटीएम में यह सुविधा होगी, जैसा कि आरबीआई का कहना है।

अब राहुल जैसे लाखों लोगों को छोटे ट्रॉन्जेक्शन के लिए दुकानदार से मिन्तें मांगने की जरूरत नहीं पड़ेगी। चाहे स्टेशनरी हो, समोसा हो, या फिर कोई लोकल ऑटो। अब छुट्टा मिलेगा और एटीएम भी थोड़ा लाइफ सेवियर लगेगा। तो अब आप यह समझ गए होंगे कि आरबीआई ने क्या बड़ा फैसला लिया है। अब हम बात करते हैं कि जिन नोटों को लेकर आरबीआई ने यह फैसला लिया है, उन नोटों को छापा कैसे जाता है और क्या आरबीआई एक बार में जितने चाहे उतने नोट छाप



सकता है?

तो आरबीआई को नोट छापने का अधिकार है, लेकिन वह भी एक लिमिटेड और सिस्टम के तहत ही। अगर आरबीआई 100 या 200 के नोट छापना चाहता है, तो पहले उसे सरकार से इसके लिए अनुमति लेनी पड़ती है। दोनों मिलकर यह तय करते हैं कि कितना पैसा बाजार में डाला जाना चाहिए ताकि पब्लिक को इससे कोई दिक्कत न हो, बल्कि उसे फायदा हो, और देश की अर्थव्यवस्था

पर भी बुरा असर न पड़े। इस तरह से बाजार का फ्लो ठीक तरीके से चलता रहे।

अब आप सोच रहे होंगे कि अगर ज्यादा नोट छाप दिए जाएं, तो इससे क्या दिक्कत आ सकती है? तो अगर किसी देश में जरूरत से ज्यादा लोगों के पास पैसे आ जाते हैं, यानी कि ज्यादा नोट छाप दिए जाते हैं, तो सबके पास पैसा होगा, लेकिन सामान उतना नहीं होगा। इसका सीधा असर यह हो सकता है कि महंगाई बढ़ सकती है, और आम जनता पर महंगाई का बोझ बढ़ सकता है। इसीलिए जितने चाहे उतने नोट नहीं छापे जा सकते हैं।

अब हम यह भी जान लेते हैं कि नोट छापने का नियम क्या है। भारत में मिनिमम रिजर्व सिस्टम चलता है। यानी कि आरबीआई के पास हमेशा कम से कम 200 करोड़ का सोना और विदेशी सिक्योरिटी होनी चाहिए। इसके बाद आरबीआई जरूरत और सरकार की मंजूरी के हिसाब से नोट छाप सकता है। भारत में महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक और पश्चिम बंगाल चार ऐसी जगह हैं, जहां पर नोट छापे जाते हैं।

तो आई होप आपको अब यह समझ में आ गया होगा कि आरबीआई ने 100 और 200 के नोट को लेकर क्या बड़े फैसले लिए हैं और क्यों आरबीआई जितना चाहे उतने नोट एक बार में नहीं छाप सकता? और नोट छापने की प्रक्रिया भारत में किस तरह से होती है।

1947 के दो दास्ते....

1 947 में एक ही माँ की कोख से जन्मे दो भाई, भारत और पाकिस्तान, आज अलग-अलग रास्तों पर खड़े हैं। एक तरफ भारत, जिसकी अर्थव्यवस्था दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी है, और दूसरी तरफ पाकिस्तान, जो कर्ज के जाल में फँसा, हर दिन जिंदगी की जंग लड़ रहा है। ये कहानी सिर्फ नंबरों की नहीं—256 अरब डॉलर का कर्ज पाकिस्तान पर और 2.8 ट्रिलियन डॉलर भारत पर—बल्कि उन लोगों की है जो इस बोझ तले जी रहे हैं।

कर्ज का जाल: पाकिस्तान की साँसें थमती हुई

पाकिस्तान पर 256-267 अरब डॉलर (लगभग 71 लाख करोड़ रुपये) का कर्ज है। इसका आधा हिस्सा, यानी 131.1 अरब डॉलर, विदेशी कर्ज है, जो चीन, IMF, और सऊदी अरब जैसे देशों से लिया गया है। बाकी 87.24 अरब डॉलर घरेलू कर्ज है, जो अपने ही बैंकों और लोगों से उधार लिया गया। हर साल, पाकिस्तान अपनी कमाई का 50% से ज्यादा, यानी 34.8 अरब डॉलर, सिर्फ कर्ज का ब्याज और पुराने कर्ज चुकाने में खर्च करता है।

ये कर्ज कहाँ से आया? सबसे बड़ा हिस्सा, 68.91 अरब डॉलर, चीन ने दिया, जिसमें से 30 अरब डॉलर CPEC (चीन-पाकिस्तान इकानौमिक कॉरिडोर) के लिए हैं—सड़कें, बिजलीघर, और ग्वादर बंदरगाह। IMF, वर्ल्ड बैंक, और ADB ने 38.8 अरब डॉलर दिए, जो स्कूल, पानी, और हॉस्पिटल जैसे प्रोजेक्ट्स के लिए हैं। सऊदी अरब और UAE ने 3 और 2 अरब डॉलर के लोन दिए, ताकि पाकिस्तान तेल खरीद सके। लेकिन ये कर्ज जितना मदद करता है, उतना ही गले की फाँस बनता जा रहा है।

इस कर्ज का इस्तेमाल कहाँ हो रहा है? ज्यादातर पुराने कर्ज चुकाने में। इसके अलावा, 9.5 अरब डॉलर की विदेशी मुद्रा भंडार को बचाने, तेल आयात (11.1 अरब डॉलर), और CPEC प्रोजेक्ट्स में। लेकिन सच ये है कि आप पाकिस्तानी को इसका फायदा कम, दर्द ज्यादा मिल रहा है। 2023 में 38% महंगाई ने रोटी तक मुश्किल कर दी। लोग सड़कों पर हैं, क्योंकि IMF की शर्तें—टैक्स बढ़ाना, सब्सिडी हटाना—उनका जीना मुहाल कर रही हैं।

IMF का बैसाखी: आखिरी उम्मीद या नया जाल?

पाकिस्तान IMF से बार-बार कर्ज लेता रहा है—1950 से अब तक 26 बार। 2024 में 7 अरब डॉलर का नया लोन मिला, और 2025 में 1.3 अरब डॉलर का और कर्ज मिलने की बात चल रही है। ये पैसा जलवायु परिवर्तन और अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए है। IMF कहता है, “पाकिस्तान का कर्ज टिकाऊ है, अगर सही नीतियाँ अपनाई जाएँ।” लेकिन सवाल ये है—क्या ये नीतियाँ लोगों के लिए हैं, या सिर्फ कर्जदाताओं के लिए?

IMF की शर्तें सख्त हैं: टैक्स बढ़ाओ, सब्सिडी हटाओ, सरकारी कंपनियाँ बेच दो। 2024 में आजाद कश्मीर में लोग सड़कों पर उतरे, क्योंकि बिजली और आटे के दाम आसमान छू रहे थे। X पर लोग कहते हैं,

- एक महाशक्ति की ओर, दूसरा मज़बूत में
- पाकिस्तान पर 21.6 लाख करोड़ कर्ज

विवरण	भारत	पाकिस्तान
कुल कर्ज (2024)	2.8 ट्रिलियन डॉलर (335 लाख करोड़)	256-267 अरब डॉलर (71 लाख करोड़)
विदेशी कर्ज	717.9 अरब डॉलर (19.2% GDP)	131.1 अरब डॉलर (35.1% GDP)
कर्ज-से-GDP अनुपात	56.7%	69.0%
विदेशी मुद्रा भंडार	576.76 अरब डॉलर	9.5 अरब डॉलर
GDP (2024)	3.889 ट्रिलियन डॉलर	375 अरब डॉलर
आर्थिक वृद्धि (2024)	7.021%	2.377%
महंगाई (2023)	6.8%	38%
प्रति व्यक्ति आय (2021)	2,277 डॉलर	1,518 डॉलर
HDI (2021)	0.633 (134वीं)	0.540 (161वीं)
साक्षरता	74%	59%
गरीबी (< \$2.15/दिन)	11%	24%

“हम कर्ज के गुलाम बन गए।” फिर भी, IMF का लोन मिलने की संभावना ज्यादा है, क्योंकि पाकिस्तान का रणनीतिक महत्व—उसके परमाणु हथियार और चीन से दोस्ती—दुनिया को उसे ढूँढ़ने नहीं देता।

लेकिन ये कर्ज कैसे चुकाएगा पाकिस्तान? वो चीन से 5 अरब डॉलर के कर्ज को लंबा करने की बात कर रहा है। नए कर्ज, जैसे 500 मिलियन डॉलर के सुकूक बॉन्ड, लेने की योजना है। टैक्स से 44 अरब डॉलर जुटाने का लक्ष्य है, और सरकारी कंपनियाँ जैसे PIA बेचकर 2-3 अरब डॉलर। लेकिन 9.5 अरब डॉलर की रिंजर्व और 68% टैक्स सिर्फ ब्याज में खर्च होने से रास्ता मुश्किल है।

युद्ध की छाया: कौन देगा साथ?

अगर पाकिस्तान युद्ध में फँसता है, तो कौन उसकी आर्थिक मदद करेगा? ये सवाल सिर्फ पैसों का नहीं, बल्कि रणनीति और दोस्ती का है।

चीन: सबसे बड़ा दोस्त, जो 68.91 अरब डॉलर का कर्जदाता है। CPEC में 62 अरब डॉलर लगाने वाला चीन पाकिस्तान को इमरजेंसी लोन, कर्ज स्थगन, या व्यापार मदद देगा। लेकिन शर्त होगी—क्षेत्रीय शांति बनी रहे।

सऊदी अरब और UAE: सऊदी ने 5 अरब डॉलर के निवेश का वादा किया, और UAE ने 2 अरब डॉलर का व्यापार समझौता। युद्ध में तेल या नकद मदद मिल सकती है, खासकर अगर पाकिस्तान ईरान के खिलाफ सड़कों का साथ दे।

अमेरिका: अगर युद्ध आतंकवाद के खिलाफ हो, तो मदद मिल सकती है, लेकिन भारत के साथ युद्ध में शायद सड़कों का साथ दे।

ही कोई सहारा दे। अमेरिका IMF के जारी दबाव बनाता है।

तुर्की और कतर: छोटी-मोटी मदद, जैसे व्यापार छूट या लोन, दे सकते हैं।

पाकिस्तान का परमाणु हथियार और अफगानिस्तान से नज़दीकी उसे अहम बनाती है, लेकिन युद्ध की कीमत कोई नहीं चाहता। X पर लोग कहते हैं, “हमारी सेना मज़बूत है, लेकिन पेट खाली है।” युद्ध में मदद मिलेगी, लेकिन उसकी कीमत क्या होगी?

भारत का कर्ज: विशाल, किर भी हल्का

भारत पर 2.8 ट्रिलियन डॉलर (लगभग 235 लाख करोड़ रुपये) का कर्ज है, जो पाकिस्तान के कर्ज से 10 गुना ज्यादा है। इसमें 2.1 ट्रिलियन केंद्र सरकार का, 600-700 अरब राज्य सरकारों का, और 717.9 अरब डॉलर विदेशी कर्ज है। लेकिन भारत की अर्थव्यवस्था—3.889 ट्रिलियन डॉलर—इतनी बड़ी है कि कर्ज का बोझ 56.7% GDP तक सीमित है, जो पाकिस्तान के 69.0% से कम है।

भारत का ज्यादातर कर्ज घरेलू है, रुपये में, जो बैंकों और आम लोगों से लिया जाता है। इससे विदेशी मुद्रा का जोखिम कम है। विदेशी कर्ज, जो GDP का 19.2% है, ज्यादातर कर्मशाल लोन, NRI डिपॉजिट, और वर्ल्ड बैंक जैसे संस्थानों से है। भारत के पास 576.76 अरब डॉलर की रिंजर्व और 300 अरब डॉलर की टैक्स आय है, जो कर्ज चुकाने को आसान बनाती है।

लेकिन भारत भी चुनौतियों से खाली नहीं। राज्यों का कर्ज बढ़ रहा है, और अगर ब्याज दरें बढ़ीं, तो दबाव पड़ सकता है। फिर भी, 7.021% की GDP ग्रोथ और दुनिया

की पाँचवीं सबसे बड़ी इकानौमी भारत को मज़बूत बनाती है।

भारत VS पाकिस्तान: एक ही मिट्टी, अलग क्रिस्म

1947 में भारत और पाकिस्तान एक ही जगह से शुरू हुए, लेकिन आज उनकी कहानियाँ जुदा हैं। भारत की GDP 3.889 ट्रिलियन डॉलर है, जो पाकिस्तान (375 अरब डॉलर) से 10 गुना ज्यादा। भारत की प्रति व्यक्ति आय 2,277 डॉलर है, जबकि पाकिस्तान की 1,518 डॉलर। भारत की रिंजर्व 576.76 अरब डॉलर है, जो 60 गुना ज्यादा है पाकिस्तान की 9.5 अरब डॉलर से।

महंगाई में भी फर्क है। भारत में 6.8% (2023), जो 4% तक आने की उम्मीद है। पाकिस्तान में 38%, जो रोटी-दाल को सपना बना देती है। भारत का HDI (0.633) और साक्षरता (74%) पाकिस्तान (0.540, 59%) से बेहतर है। लेकिन दोनों मुल्कों में गरीबी और बेरोज़गारी है—भारत में 11% लोग 2.15 डॉलर रोज़ से कम पर जीते हैं, पाकिस्तान में 24%।

भारत की 1991 की उदारीकरण नीतियों ने उसे IT और ग्लोबल ट्रेड का सितारा बनाया। G20 की अगुआई और QUAD की सदस्यता ने FDI (70 अरब डॉलर) लाया। पाकिस्तान, जो 1961-1980 में भारत से तेज़ बढ़ा, 1971 के बांग्लादेश अलगाव और भट्टो की नेशनलाइजेशन नीतियों से पिछ़ गया। CPEC और चीन की दोस्ती ने मदद की, लेकिन कर्ज का जाल भी बिछा।

एक नई सुबह का सपना

पाकिस्तान का कर्ज उसे रातों की नींद हराम कर रहा है, लेकिन भारत का कर्ज उसकी उड़ान को पंख दे रहा है। पाकिस्तान को टैक्स सुधार, सरकारी कंपनियों की बिक्री, और CPEC की पारदर्शिता चाहिए। भारत को गरीबी, बेरोज़गारी, और राज्यों के कर्ज पर ध्यान देना होगा। लेकिन सबसे ज़रूरी है—दोनों मुल्कों को दुश्मनी छोड़, व्यापार (2018 में 3 अरब डॉलर, अब 1.2 अरब) बढ़ाना होगा।

हर कर्ज एक बोझ नहीं, बल्कि भविष्य बनाने का मौका हो सकता है। पाकिस्तान के लोग, जो महंगाई और बेरोज़गारी से ज़्यादा रहे हैं, और भारत के गाँव, जहाँ बिजली और पानी की कमी है, दोनों एक बेहतर कल के हकदार हैं। क्या हम, 1947 के उन सपनों को, फिर से एक कर सकते हैं?

हमारा भविष्य सिर्फ हमारी गलतियों का नतीजा नहीं, बल्कि हमारी हिम्मत का आईना है। भारत और पाकिस्तान, मिलकर, एक नई कहानी लिख सकते हैं—जहाँ कर्ज बोझ नहीं, बल्कि सपनों का साथन बने।

सोमवार, 05 मई 2025 , विक्रम संवत् 2080

डेनमार्क के खूबसूरत सिल्केबोर्ग शहर के पास ब्योर्जेस्टोव दलदल है

7 5 साल पहले की तारीख थी- 6 मई 1950। उस दिन दो लोग यहां काम कर रहे थे। अन्नानक उन्हें अहसास हुआ कि दलदल में लाश पड़ी है। उन्होंने अंदाजा लगाया कि ज़रूर दस बीस दिन पहले किसी ने उस आदमी की हत्या करके शव दलदल में फेंका है। तब वो नहीं जानते थे कि ये मानव शरीर यहां 2400 साल से पड़ा है। उसकी त्वचा, बाल, और चेहरे के भाव इतने साफ थे कि किसानों को लगा ये हाल ही में मरा व्यक्ति है। खंड, पुलिस बुलाई गई।

उस व्यक्ति के खंड की खाल ओर ऊन से बड़ी एक बुकीली टोपी पल्ली झुट्ठी थी। जिसे घंटे के पछे से झुट्ठी के नीचे बांधा गया था। उसके बाल इतने छोटे कठे थे कि लगभग पूरी तरह से टोपी से छिपे थे। कमर के बायों ओर घंटे को एक विकली बेल थी। जानवरों की खाल से बना एक कंदा अपकी गर्डन के बायों ओर कसकर योंगा गया था जिससे उसकी छाँट टूट गई थी। इसके अतावा उसने कुछ पल्ली नहीं थी। करीब यालीस साल और 5 फीट 2 इंच के दुबले पहले उस आदमी ने जोते के दिन दाढ़ी नहीं बर्बाई थी। सां, अरियरी बार खाने में जौ, अतली, और जंगली पोथों (जैसे नॉटवॉट) से बना एक सादा दीलिया खाया था। पुरातत्वविदों ने जब जाय की तो दुनिया हैरान रह गई। इस झणी को टॉलंड नैन नाम दिया गया। दलदल की अल्पी जिटी, कम ऑक्सीजन, और ठंडे वातावरण ने उसे प्राकृतिक रूप से संरक्षित किया था, तीक दैसे ही जैसे बर्फ ने आदीकी को। 1976 में पुरिया ने उसका अंतर्गत भी लिया जो आज सबसे पुराने अंतर्गत का नमूना है। टॉलंड नैन की खोज आयरन एज (लौह युग) के अत्रीय पूरोगी की सम्भावा, विश्वासों, और रहस्यमयी प्रथाओं की एक अत्यधिक झलक देती है। उसकी कहानी न सिर्फ रोचक है, बल्कि जानवर इतिहास की गहराई की भी झलक करती है।

टॉलंड नैन का शरीर प्रसाधारण रूप से संरक्षित था। उसकी लिया पर युर्जियन, टाटी की खाल, और यहां तक कि पलकें भी दियाई देती थीं। उसका येत्या शांत और लगभग सोया ऊआ सा लगता था जो उसकी गौत के पल को और रहस्यमयी बनाता है। वैज्ञानिकों ने पूरिया की तरफ से युर्जु फॉर्मो से झुट्टी है। बड़ा सवाल था: उसकी लिया क्यों झुट्टी है? वैज्ञानिकों का जाना है कि यह एक धार्मिक विलादन था। उसी जगह बाहर साल पहले एक शव ऐसी ही सतह में और मिला था। दैसे डेनमार्क, स्टीडन, और अतरी जर्नीन के दलदलों में टॉलंड नैन जैसी सैकड़ों "बॉग बॉडीज" (दलदली लाशें) निली हैं, जिनमें से कई की मृत्यु हिंसक तरीके से झुट्टी है। डेनिश इतिहासकार पी वी। लौब ने अपनी किताब The Bog People: Iron-Age Man Preserved (1965) में तर्क दिया कि ये बॉलिदान फसल की सृजनी, युद्ध में जीत या देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किए जाते थे।

टॉलंड नैन के खंडों और भेजन उस समय की तकनीक और अर्थव्यवस्था की कहानी करते हैं। उसकी घंटे की टोपी और बैल दियाते हैं कि आयरन एज के लोग घंटे को संरक्षित करने, रंगने, और सिलाई में मारियर थे। उसके पेट में जिता दीलिया बताता है कि जौ और अलसी की खेती गोती थी। जंगली पोथों का इस्तेगाल बताता है कि लोग अभी भी शिकार और खेती का अधिकार जीते थे। पुरातत्वविद किशियन फिशर, जो सिल्केबोर्ग यूजियम के साथ काम करते हैं, उन्होंने बताया कि टॉलंड नैन जैसे अत्रीय सामाजिक संरचना और धार्मिक विश्वासों की जटिलता को उत्तापन करते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि बॉलिदान के लिए युने गए लोग संभवतः समुद्राय में विशेष स्थान रखते थे, या तो वो सम्भानित थे या अपराधी माने जाते थे। टॉलंड नैन की कल्पनी कई अवसरों से सवाल खड़ी है। वो कौन था? क्या वो येरेंजा से बॉलिदान के लिए तैयार ऊआ या उसे जबरदस्ती मार गया? उसका शांत देशरा क्या दर्शाता है- स्थैकृति, बोरेशी या कुछ और? दलदल में दफनने की प्रथा क्यों थी? कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि दलदल को उस समय यीवंग माना जाता था क्योंकि ये जटीन और पानी का निलन था, जो आमाओं की दुनिया से जुड़ा था। टॉलंड नैन का शरीर आज सिल्केबोर्ग यूजियम में है जहां उसका येरहा लगभग 1,400 साल पुरानी कहानी सुनाता है। उसकी आंखें बंद हैं तोकिन वो लगार अतीत की गहराई को खोलता है।

नितिन ठाकुर

साभार - सोशल मीडिया

जुबानी तीर

“

पिछली सरकारों ने अपने निजी स्वार्थ और अपनी सत्ता को बचाने के लिए, जाति से जुड़ी संवेदनाओं का गलत उपयोग किया, कितने ही सालों तक ध्रुवीकरण और तुष्टिकरण से समाज में अलगाव का ज़हर मिलाया। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार ने सामाजिक गणना का निर्णय लिया है उससे polaristaion नहीं policy transformation सुनिश्चित होगा। यह accountability और निष्पक्षता पर आधारित निर्णय है - राजनीतिक नौटंकी के बिना ऐतिहासिक असंतुलन को ठीक करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

रामदास अठावले (केंद्रीय मंत्री)



“



जातीय जनगणना की मांग कांग्रेस ने की थी। यह सामाजिक न्याय के लिए अनिवार्य है। पहले बीजेपी और RSS इसे गलत बताते थे, अब वही लोग इसे मास्टरस्ट्रोक कह रहे हैं। यह पूरे विपक्ष की जीत है।

संदीप दीक्षित (कांग्रेस नेता)

“



इस सरकार में भ्रष्टाचार की कोई सीमा नहीं है। अन्याय उसी स्तर पर है, और इसीलिए पीडीए परिवार एक साथ आया है। भाजपा इस एकता के डर से जाति जनगणना करा रही है। पीडीए परिवार यह सुनिश्चित करने के लिए एकजुट रहेगा कि “जाति जनगणना में कोई अनियमितता न हो।

अखिलेश यादव (सपा नेता)

वैरिवक अर्थव्यवस्था के लिए खतरे की घंटी बन सकता है अमेरिका-चीन टैरिफ युद्ध

@ अनुराग पाठक

3 अमेरिका और चीन के बीच चल रहा व्यापार युद्ध अब गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने हाल ही में इस बात के संकेत दिए हैं कि वे चीन पर लगाए गए भारी टैरिफ (आयात शुल्क) को कम करने पर विचार कर सकते हैं। यह बयान ऐसे समय आया है जब दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाएं इस टैरिफ युद्ध की गर्मी से प्रभावित हो रही हैं।

ट्रम्प प्रशासन ने 'अमेरिका फर्स्ट' नीति के तहत 2020 के बाद से चीन से आने वाले उत्पादों पर कई चरणों में भारी शुल्क लगाए थे। इनमें कुछ उत्पादों पर तो 145% तक टैरिफ लगाया गया, जिससे चीनी सामान अमेरिकी बाजार में महंगे हो गए। जबाब में चीन ने भी प्रलटवार करते हुए अमेरिकी उत्पादों पर 125% तक शुल्क बढ़ा दिया। इससे व्यापार की गति धीमी हुई और दोनों देशों के लिए आर्थिक नुकसान की स्थिति पैदा हो गई।



लेकिन “चीन व्यापार करना चाहता है” यह उनकी टिप्पणी इस बात का प्रमाण है कि बातचीत की गुंजाइश अभी भी बाकी है।

इस व्यापार युद्ध ने सिर्फ माल की कीमतों को ही नहीं बढ़ाया, बल्कि राजनीतिक और कूटनीतिक संबंधों में भी खटास पैदा कर दी है। चीन द्वारा बोइंग विमानों की डिलीवरी को रोकना और कीमती धातुओं (रेयर अर्थ मटेरियल) के निर्यात पर रोक लगाना भी इसी तानाव का हिस्सा है। ये वही धातुएं हैं जिनका इस्तेमाल सेमीकंडक्टर, ऑटोमोबाइल, रक्षा उपकरण और हाईटेक तकनीक में किया जाता है। ऐसे कदम दुनिया की तकनीकी तरकीके के लिए भी खतरे की घंटी है।

व्यापार युद्ध किसी के भी हित में नहीं होता। यह जनता के लिए महंगाई, उद्योगों के लिए अनिश्चितता और देशों के बीच अविश्वास को बढ़ावा देता है। यह ज़रूरी है कि अमेरिका और चीन दोनों राष्ट्र अपने राजनीतिक और रणनीतिक एजेंडे से ऊपर उठकर वैश्विक आर्थिक स्थिरता के लिए काम करें।

आज आवश्यकता है सूझाबूझ और समझदारी की, न कि टकराव की। अगर यह टैरिफ युद्ध आगे और गहराया, तो यह केवल अमेरिका और चीन की नहीं, बल्कि पूरी दुनिया की आर्थिक स्थिरता को डगमगा सकता है। इसीलिए यह वक्त है जब दोनों देश एक-दूसरे की बात सुनें, समाधान तलाशें और एक पारस्परिक सहमति के आधार पर व्यापार को फिर से पटरी पर लाएं। आखिरकार, यह टकराव जितना जल्दी सुलझे, उतना बेहतर होगा। न केवल इन दोनों महाशक्तियों के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए।

जात-पात से ऊपर उठकर भक्ति की लौ जलाने वाला संत कनकदास

संत कनकदास, कर्नाटक के एक ऐसे संत कवि और भक्त थे, जिनका जीवन भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति और मानवता की सेवा में समर्पित था। सोलहवीं सदी में जन्मे इस महान आत्मा ने न केवल भक्ति की गंगा बहाई, बल्कि समाज में व्याप्त जाति भेद और अहंकार को अपनी रचनाओं और जीवन से चुनौती दी। उनका जीवन एक ऐसी मशाल है, जो आज भी हमें प्रेम, समानता और सनातन धर्म की शाश्वत शिक्षा की ओर ले जाती है। यह लेख उनके जीवन, शिक्षाओं और भक्ति के उस अनमोल रास्ते को दर्शाता है, जिसे उन्होंने अपने काव्य और कार्यों से रोशन किया।

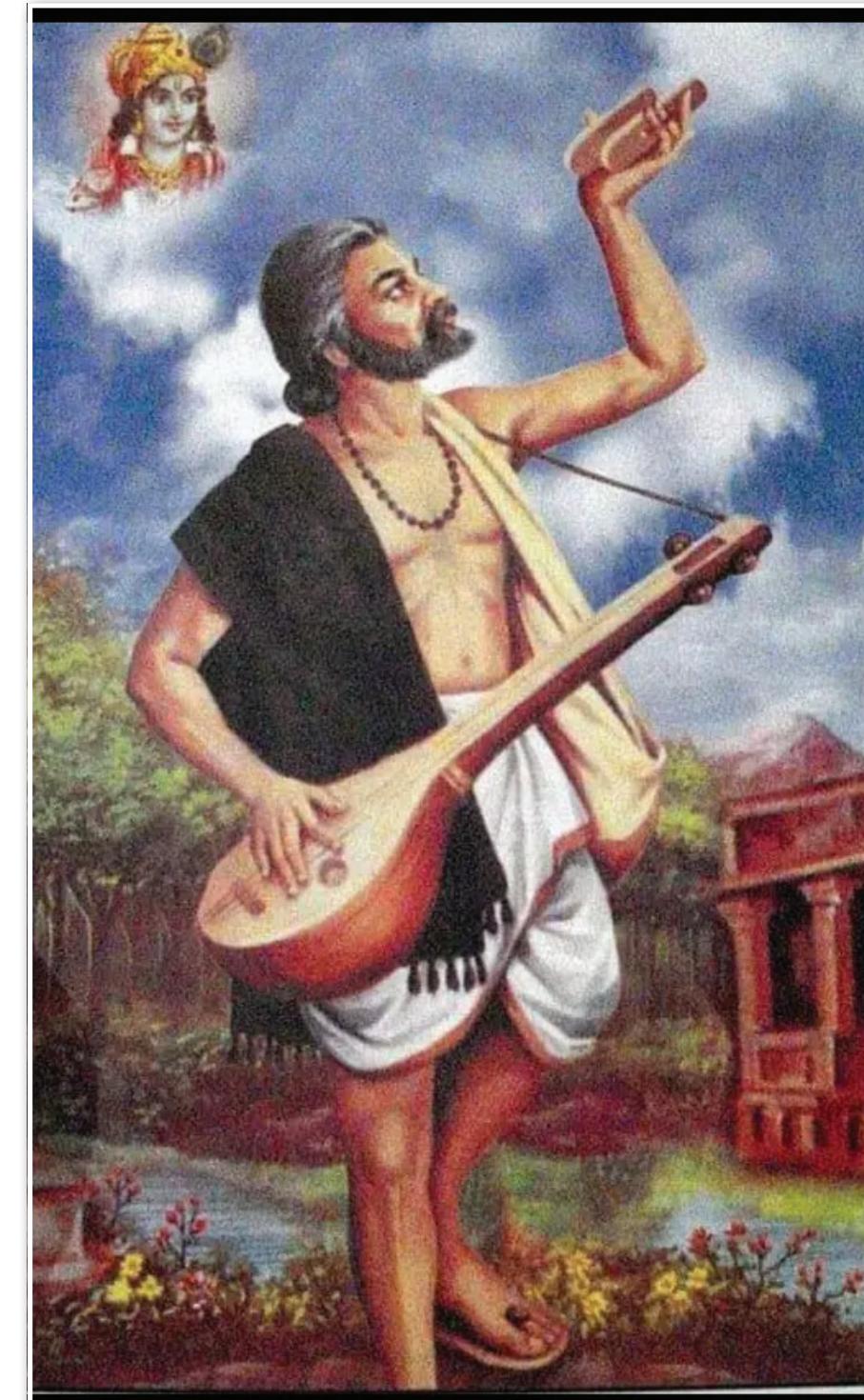
भक्ति की ओर पहला कदम: एक योद्धा से भक्त तक

कनकदास का जन्म 1509 में कर्नाटक के हवेरी जिले के बाड़ा गांव में एक कुरुबा परिवार में हुआ था। उनके पिता बीरप्पा नायका एक योद्धा और संगीतकार थे, और माता बीच्छम्मा की आवाज में भक्ति का स्वर गूंजता था। बचपन में ही कनकदास, जिनका असली नाम तिम्पणा नायका था, ने संस्कृत और कन्नड़ में विद्या अर्जित की। वे तर्क, व्याकरण, काव्य और दर्शन के विद्वान बन गए। युवावस्था में वे विजयनगर साम्राज्य के एक नन्हे से किले, बंकापुर, के सेनापति बने। परंतु जीवन की असली मिलत, जब युद्ध में घायल होने के बाद उन्हें भगवान हरि का दर्शन हुआ।

एक भिखारी के रूप में आए श्रीकृष्ण ने उन्हें तीन वरदान मांगने के लिए कहा। तिम्पणा ने न धन मांगा, न सत्ता। उन्होंने केवल भगवान का साथ, उनकी कृपा और उनके सच्चे स्वरूप का दर्शन मांगा। इस अनुभव ने उनके हृदय को बदल दिया। योद्धा तिम्पणा अब कनकदास बन गए—एक भक्त, जिसका जीवन श्रीकृष्ण की भक्ति में रंग गया। उन्होंने आदि केशव मंदिर बनवाया और व्यासतीर्थ के शिष्य बनकर द्वैत वेदांत की गहराई में डूब गए। यह वह क्षण था, जब एक साधारण आत्मा सनातन धर्म के विशाल सागर में उत्तर पड़ी।

उदुपी का चमत्कार: भक्ति की जीत

कनकदास का जीवन भक्ति की ऐसी कहानियों से भरा है, जो हृदय को छू लेती हैं। उदुपी के श्रीकृष्ण मंदिर में हुआ चमत्कार इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। उस समय मंदिर में निम्न जाति के लोगों का प्रवेश वर्जित था। कनकदास, एक कुरुबा होने के कारण, मंदिर में प्रवेश नहीं कर पाए। पर उनकी भक्ति ने उन्हें पीछे नहीं हटने दिया। मंदिर के पीछे खड़े होकर उन्होंने अपनी मधुर वाणी में कीर्तन गाया, “बागिलनु तेरेदु सवेनु कोडु हरिए” (द्वार खोलो, मुझे अपनी सेवा करने दो, हे हरि)। उनकी भक्ति की पुकार ऐसी थी कि स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने उनकी कनकना किंडी से भगवान के दर्शन करते हैं, जो हमें याद दिलाता है कि सच्ची भक्ति सामाजिक बंधनों को तोड़ देती है।



या धन मायने नहीं रखता। भक्ति ही वह कुंजी है, जो हर ताले को खोल देती है। आज भी उदुपी मंदिर में भक्त उस कनकना किंडी से भगवान के दर्शन करते हैं, जो हमें याद दिलाता है कि सच्ची भक्ति सामाजिक बंधनों को तोड़ देती है।

भक्ति और समता की शिक्षाएँ: कनकदास का दर्शन

कनकदास की शिक्षाएँ सनातन धर्म के मूल तत्वों—

समान बनाया, फिर मनुष्य क्यों भेदभाव करता है? उनकी रचना “रामधान्य चरित्र” में राणी (गरीबों का अनाज) और चावल (अमीरों का अनाज) के बीच काल्पनिक संवाद के माध्यम से उन्होंने सामाजिक असमानता पर तीखा व्यंग्य किया। राणी की जीत यह दर्शाती है कि भगवान के सामने सच्चाई और सादगी ही श्रेष्ठ हैं।

कनकदास का दर्शन केवल भक्ति तक सीमित नहीं था। वे मानते थे कि अहंकार और अभिमान आत्मा को भगवान से दूर ले जाते हैं। उनकी रचना “हरि भक्ति सारा” में वे भक्तों को सिखाते हैं कि सच्ची भक्ति में नम्रता और समर्पण जरूरी है। उनकी एक और रचना “तल्लनिसादिरु कंद्या तालु मनवे” (चिंता मत करो, भगवान सबकी रक्षा करते हैं) आशा और विश्वास का संदेश देती है। ये शिक्षाएँ सनातन धर्म के उस सत्य को उजागर करती हैं, जो कहता है कि हर आत्मा का कर्तव्य है भगवान की सेवा और मानवता की भलाई।

काव्य और संगीत: भक्ति का अमर स्वर

कनकदास ने अपनी भक्ति को कन्नड़ काव्य और संगीत के माध्यम से व्यक्त किया। उनकी लगभग 240 रचनाएँ, जिनमें कीर्तन, उगाभोग, पद और दार्शनिक गीत शामिल हैं, कर्नाटक की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ जैसे “मोहनतरंगिणी” (कृष्ण की लीलाओं का काव्य), “नलचरित्र” (नल-दमयंती की कथा) और “हरि भक्ति सारा” भक्ति और दर्शन का अनूठा संगम हैं। उनके कीर्तन, जैसे “कृष्ण नी बेगने” और “जगदोद्धारण आदिसिद्धु यशोदे”, आज भी कर्नाटक संगीत में गाए जाते हैं। इन रचनाओं में भावनाओं की गहराई, दर्शन की ऊँचाई और सामाजिक सुधार की पुकार है। कनकदास ने कन्नड़ में भक्ति को आम जन तक पहुंचाया, जिससे हर व्यक्ति भगवान के करीब आ सका। उनकी रचनाएँ सनातन धर्म की उस शक्ति को दर्शाती हैं, जो कला और भक्ति के माध्यम से आत्मा को परमात्मा से जोड़ती है।

एक अनंत प्रेरणा

संत कनकदास का जीवन हमें सिखाता है कि भक्ति वह शक्ति है, जो हर बाधा को पार कर सकती है। चाहे वह जाति का भेद हो, सामाजिक रूढ़ियां हों, या मन का अहंकार—सच्ची भक्ति सबको पिघला देती है। उनका जीवन सनातन धर्म के उस सत्य को जीवंत करता है, जो कहता है कि भगवान सभी के हैं, और हर आत्मा में वही परमात्मा बसता है।

आज, जब समाज में असमानता और अहंकार फिर से सिर उठा रहे हैं, कनकदास की शिक्षाएँ हमें रास्ता दिखाती हैं। उनकी भक्ति, उनके काव्य और उनकी समता की पुकार हमें याद दिलाती है कि सनातन धर्म का असली अर्थ है—सभी को गले लगाना, सभी को प्रेम देना। कनकदास वह सूरज है, जिनकी किरणें आज भी हमारे हृदय को रोशन करती हैं। उनकी भक्ति की गंगा में डूबकी लगाकर हम भी उस परम सत्य को पा सकते हैं, जो जीवन को सार्थक बनाता है।



@ डॉ महिमा मक्कर

नारियल पानी, जिसे आयुर्वेद में 'नारीकेलोदक' कहा जाता है, एक प्राकृतिक और शीतल पेय है जो न केवल शरीर को ताजगी प्रदान करता है, बल्कि अनेक स्वास्थ्य लाभ भी देता है। यह विशेष रूप से गर्भियों में शरीर को ठंडक और हाइड्रेशन प्रदान करने के लिए प्रसिद्ध है। आइए जानते हैं नारियल पानी के आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से स्वास्थ्य के लाभ।

लिवर की गर्भी को भी कम करता है नारियल पानी

आयुर्वेद के अनुसार, नारियल पानी की तासीर ठंडी होती है, जो शरीर में पित्त दोष को शांत करने में मदद करती है। यह गर्भी, जलन, और पाचन संबंधी समस्याओं को दूर करने में सहायक है। विशेष रूप से गर्भियों में इसका सेवन शरीर को ठंडक प्रदान करता है और लिवर की गर्भी को भी कम करता है।

पाचन तंत्र को करता है मजबूत

नारियल पानी में प्रीबायोटिक फाइबर होता है, जो आंतों में अच्छे बैक्टीरिया की वृद्धि को बढ़ावा देता है। यह कब्ज़, अपच और गैस जैसी पाचन संबंधी समस्याओं को दूर करने में मदद करता है। इसके नियमित सेवन से पाचन तंत्र स्वस्थ रहता है और शरीर से विषाक्त पदार्थ बाहर निकलते हैं।

हाइड्रेशन और इलेक्ट्रोलाइट्स का स्रोत

नारियल पानी में पोटेशियम, सोडियम, कैल्शियम और मैनीशियम जैसे इलेक्ट्रोलाइट्स प्रचुर मात्रा में होते हैं, जो शरीर के जल संतुलन को बनाए रखते हैं। यह विशेष रूप से शारीरिक श्रम या गर्भी के मौसम में शरीर को हाइड्रेटेड रखने के लिए उपयुक्त है।

त्वचा और बालों के लिए है लाभकारी

नारियल पानी में एंटीऑक्सीडेंट्स और विटामिन्स होते हैं, जो त्वचा को निखारने और मुँहासों को कम करने में मदद करते हैं। इसके नियमित उपयोग से त्वचा में चमक आती है और बालों की गुणवत्ता में सुधार होता है। यह बालों को मॉइस्चराइज करता है और डैंड्रफ की



समस्या को भी कम करता है।

हृदय स्वास्थ्य को बनाए रखता है

नारियल पानी में पाए जाने वाले पोटेशियम और मैनीशियम हृदय की धड़कन को नियमित रखते हैं और रक्तचाप को नियंत्रित करते हैं। यह 'खराब' कोलेस्ट्रॉल (LDL) को कम करने और 'अच्छे' कोलेस्ट्रॉल (HDL) को बढ़ाने में सहायक है, जिससे हृदय संबंधी बीमारियों का खतरा कम होता है।

वजन नियंत्रण में सहायक

नारियल पानी में कैलोरी की मात्रा कम होती है और यह शरीर को ताजगी प्रदान करता है। इसके नियमित सेवन से भूख नियंत्रित रहती है और वजन घटाने में मदद मिलती है। यह एक प्राकृतिक और स्वस्थ विकल्प है, जो वजन नियंत्रण में सहायक है।

मूत्राशय और गुर्दे के स्वास्थ्य के लिए

नारियल पानी एक प्राकृतिक मूत्रवर्धक है, जो शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। यह मूत्राशय और गुर्दे की सूजन को कम करता है और पथरी की समस्या को भी नियंत्रित करता है।

जिससे मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है।

वात, पित्त और कफ दोषों को संतुलित करता नारियल पानी

आयुर्वेद के अनुसार, नारियल पानी का सेवन शरीर के वात, पित्त और कफ दोषों को संतुलित करता है। यह शरीर की आंतरिक उष्मा को शांत करता है और ताजगी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, यह शरीर में जल की कमी को पूरा करता है और शरीर को पोषण प्रदान करता है।

मूत्राशय और गुर्दे की सेहत के लिए अच्छा है नारियल पानी

नारियल पानी के नियमित सेवन से शरीर में ठंडक, हाइड्रेशन, पाचन में सुधार, त्वचा और बालों की गुणवत्ता में बुद्धि, हृदय स्वास्थ्य में सुधार, वजन नियंत्रण, मूत्राशय और गुर्दे की सेहत में लाभ, और मानसिक शांति प्राप्त होती है। इसलिए, इसे अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल करना एक स्वस्थ विकल्प हो सकता है।

मानसिक शांति और तनाव में कमी

नारियल पानी का सेवन मानसिक शांति प्रदान करता है और तनाव को कम करता है। यह तंत्रिका तंत्र को शांत करता है और मानसिक स्थिति को संतुलित करता है,

नारियल पानी की मात्रा का सेवन से शरीर में ठंडक,

हाइड्रेशन, पाचन में सुधार, त्वचा और बालों की गुणवत्ता में बुद्धि, हृदय स्वास्थ्य में सुधार, वजन नियंत्रण, मूत्राशय

और गुर्दे की सेहत में लाभ, और मानसिक शांति प्राप्त होती है। इसलिए, इसे अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल करना एक स्वस्थ विकल्प हो सकता है।



“ये बाबा रामदेव किसी के कंट्रोल में नहीं”

भा

रत का दिल, दिल्ली हाई कोर्ट, 30 अप्रैल 2025। जज साहब की आवाज गूँजी, “ये बाबा रामदेव किसी के कंट्रोल में नहीं। अपनी दुनिया में जीते हैं।” सामने खड़ा था एक सवाल—क्या एक शरबत की बोतल देश को दो हिस्सों में बाँट सकती है? बाबा रामदेव के “शरबत जिहाद” वाले बयान ने हिंदुस्तान की सबसे पुरानी शरबत कंपनी, हमदर्द की रुह अफज़ा, को निशाना बनाया। रुह अफज़ा, जो गर्भियों में ठंडक देता है, इफ्तार की मेज़ सजाता है, आज एक तूफान के बीच में है। रामदेव का नया वीडियो, जिसमें उन्होंने रुह अफज़ा को औरंगज़ेब और पतंजलि को भगवान राम से जोड़ा, ने कोर्ट के पुराने आदेश को टेंगा दिखाया। 8.9 लाख बार देखा गया वीडियो, 8500 लाइक्स, 2200 कमेंट्स—ये सिर्फ़ नंबर नहीं, ये एक समाज की उथल-पुथल की कहानी है।

रुह अफज़ा: एक शरबत, हज़ारों यादें

रुह अफज़ा सिर्फ़ एक ड्रिंक नहीं, ये भारत की धड़कन है। 1907 में शुरू हुआ ये सफ़र, हमदर्द के हकीमों ने गुलाब की खुशबू और ठंडक को एक बोतल में बंद किया। गर्भी की दोपहर में, जब पंखा भी हार मान ले, रुह अफज़ा का गिलास हर घर में ठंडी साँस देता है। इफ्तार की मेज़ हो या दीवाली की दावत, ये शरबत हर धर्म, हर दिल तक पहुँचता है।

हमदर्द का मतलब है “दर्द बाँटने वाला।” इस कंपनी ने सिर्फ़ शरबत नहीं, बल्कि इंसानियत बाँटी। इसका मालिकाना मुस्लिम परिवार के पास है, लेकिन रुह अफज़ा कभी किसी एक मज़हब का नहीं रहा। ये भारत की वो मिटास है, जो हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई—सबके लिए एक जैसी है। फिर क्यों बाबा रामदेव ने इसे “शरबत जिहाद” का नाम दिया? क्यों कहा कि इसका पैसा मस्जिदों और मदरसों में जाता है, जबकि पतंजलि का पैसा गुरुकुलों और “संनातनी” कार्यों में?

3 अप्रैल 2025 को रामदेव का वीडियो आया। पतंजलि के गुलाब शरबत को बेचते हुए, उन्होंने बाकी शरबतों को “टॉयलेट कलीनर” कहा। “शरबत जिहाद” का जिक्र करके, उन्होंने हमदर्द पर निशाना साधा, बिना नाम लिए। लेकिन हर कोई समझ गया। रुह अफज़ा के चाहने वालों का दिल टूटा। फिर भी, हमदर्द ने हिम्मत नहीं हारी। कंपनी ने कहा, “रुह अफज़ा 100 साल से सबका है। हम नफ़रत नहीं, मोहब्बत बाँटते हैं।” शार्क टैंक इंडिया की जज नमिता थापर ने ट्रीटी किया, “रुह अफज़ा का जवाब कलास है। ये ब्रांड भारत की एकता है।” X पर लोग बोले, “रामदेव की नफ़रत हारेगी, रुह अफज़ा जीतेगा।”

रामदेव: योगी, बिज़नेसमैन, या बाबी?

बाबा रामदेव। एक नाम, जो कभी योग की सादगी था, आज तूफान का पर्याय है। कभी वो टीवी पर अनुलोम-विलोम सिखाते थे, आज पतंजलि के ज़रिए अरबों की मार्केट में राज करते हैं। लेकिन उनकी जुबान, वो हमेशा विवादों की आग जलाती है। कभी अलोपैथी को “बकवास” कहा, कभी विज्ञापनों में झूठे दावे किए। सुप्रीम कोर्ट ने 2024 में पतंजलि के ऐड्स बैन किए, केरल कोर्ट ने 2025 में वारंट निकाले। फिर भी, रामदेव रुके नहीं।

“शरबत जिहाद” का बयान उनकी पुरानी स्क्रिप्ट का नया चैप्टर है। 22 अप्रैल 2025 को दिल्ली हाई कोर्ट ने आदेश दिया: पुराना वीडियो हटाओ, ऐसे बयान मत दो। लेकिन रामदेव ने नया वीडियो डाला। औरंगज़ेब बनाम

शरबत जिहाद का हंगामा



भगवान राम। रुह अफज़ा बनाम पतंजलि। 8.9 लाख व्यूज़। कोर्ट की बात हवा में। जज साहब ने कहा, “ये आदमी अपनी दुनिया में जीता है।” रामदेव का जवाब? “मैंने तो हमदर्द का नाम नहीं लिया। वो खुद ‘शरबत जिहाद’ को अपने ऊपर ले बैठे।”

18 अप्रैल को X पर रामदेव का बयान वायरल हुआ: “अगर वो मस्जिद और मदरसा बनाते हैं, तो खुश हों संनातनी सावधान रहों।” ये सिर्फ़ मार्केटिंग नहीं, ये एक आग थी, जो समाज को बाँट सकती थी। X पर कुछ यूजर्स, जैसे @Indian_Analyzer, ने रामदेव का साथ दिया, कोर्ट को “नेपोटिज़्म” का ठप्पा लगाया। लेकिन ज़्यादातर, जैसे @sardesairajdeep, ने कहा, “नफ़रत छोड़ो, देश जोड़ो।”

रामदेव का दावा है कि वो सच्चाई बोलते हैं। लेकिन क्या सच्चाई का मतलब समाज को तोड़ना है? कोर्ट में उनके वकील, राजीव नायर, ने कहा, “हमने किसी का नाम नहीं लिया।” लेकिन कोर्ट ने जवाब दिया, “आपका इरादा साफ़ था। ये बयान दिलों को चोट पहुँचाते हैं।”

कोर्ट की हँकार: क्रानून बनाम ताकत

दिल्ली हाई कोर्ट, 2 मई 2025। जस्टिस अमित बंसल की बैंच। हमदर्द के वकील, मुकुल रोहतगी और संदीप सेठी, ने रामदेव के नए वीडियो को कोर्ट में रखा। “ये सिर्फ़ प्रोडक्ट की बुराई नहीं, ये नफ़रत की आग है।” कोर्ट ने माना, वीडियो का “टीन और टेंपर” पुराने वाला ही था। रामदेव का दावा कि वो “कानून मानने वाला नागरिक” है, कोर्ट को खोखला लगा। जज ने कहा, “ये प्राइम फ़ैसी कॉन्ट्रैप्ट है।”

कॉन्ट्रैप्ट। यानी कोर्ट की अवमानना। रामदेव को एक हफ़्ते में हलफ़्ता मामा देना होगा, ये साबित करने के

लिए कि वीडियो हटाया गया। कोर्ट ने 24 घंटे में वीडियो हटाने का आदेश दिया। रामदेव के वकील ने हार्मी भरी, लेकिन सवाल वही—क्या रामदेव सचमुच मानेंगे? सुप्रीम कोर्ट में 2024 का केस, केरल का वारंट—रामदेव का इतिहास कहता है, वो क्रानून को हल्के में लेते हैं।

हमदर्द ने 2 करोड़ रुपये का हजारीना माँगा। साथ ही, रामदेव से पब्लिक माफी की डिमांड। लेकिन ये केस अब सिर्फ़ पैसों का नहीं। ये समाज के भविष्य का सवाल है। क्या एक शख्स, चाहे कितना पावरफुल हो, क्रानून से ऊपर है? कोंप्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने रामदेव के खिलाफ़ FIR की कोशिश की, धार्मिक नफ़रत फैलाने का इलजाम लगाया। भोपाल पुलिस पर दबाव है। क्या क्रानून की जीत होगी?

एक बोतल, एक भारत: आगे का रास्ता

रुह अफज़ा की बोतल छोटी सी है, लेकिन उसमें भारत की आत्मा बसती है। ये वो स्वाद है, जो गाँव की गलियों से लेकर शहर की मॉल्स तक, सबको जोड़ता है। रामदेव ने इसे “जिहाद” कहा, लेकिन जनता ने जवाब दिया। X पर लोग बोले, “रुह अफज़ा हमारा है।” नमिता थापर ने कहा, “ये ब्रांड एकता की मिसाल है।” हमदर्द ने कहा, “हम नफ़रत नहीं, प्यार बाँटते हैं।”

लेकिन ये जंग सिर्फ़ रुह अफज़ा की नहीं। ये हर उस भारतीय की जंग है, जो मानता है कि देश की ताकत उसकी विविधता में है। रामदेव का “शरबत जिहाद” सिर्फ़ एक शरबत पर हमला नहीं, ये उस भारत पर हमला है, जो गंगा-जमुनी तहजीब में यकीन रखता है। कोर्ट का फैसला सिर्फ़ रामदेव को नहीं, हर उस शख्स को मैंसेज देगा, जो नफ़रत की मार्केटिंग करता है।

X पर बहस गर्म है। कुछ रामदेव को “फ्री स्पीच”

का हीरो मानते हैं। लेकिन ज़्यादातर कहते हैं, “फ्री स्पीच का मतलब नफ़रत फैलाना नहीं।” कोर्ट का रास्ता सख्त है, लेकिन ज़रूरी है। अगर रामदेव जैसे लोग बिना सजा के ऐसे बयान देते रहेंगे, तो समाज का ताना-बाना बिखर सकता है।

हमदर्द ने सही कहा, “रुह अफज़ा 100 साल से सबका है।” लेकिन सवाल ये है—क्या हमारा समाज भी सबका रहेगा? क्या हम उस भारत को बचा पाएँगे, जहाँ हर धर्म, हर स्वाद, हर आवाज़ की जगह है? कोर्ट का फैसला एक कदम है, लेकिन असली जंग हमारे दिलों में है।

“शरबत जिहाद” का हंगामा हमें सोचने पर मजबूर करता है

दिल्ली हाई कोर्ट में एक जज बैठा है, जिसके सामने एक सवाल है: क्या क्रानून नफ़रत को रोक सकता है? एक गाँव में एक दादी है, जो अपने पोते को रुह अफज़ा पिलाती है, और कहती है, “ये हमारी परंपरा है।” एक शहर में X पर लोग टाइप करते हैं, “नफ़रत हारेगी, प्यार जीतेगा।” ये कहानी सिर्फ़ रामदेव और रुह अफज़ा की नहीं। ये कहानी भारत की है।

“शरबत जिहाद” का हंगामा हमें सोचने पर मजबूर करता है। क्या हम वो देश बनेंगे, जहाँ हर शरबत, हर इंसान, हर सपने की जगह होगी? या हम बाँट जाएँगे, एक बोतल के बहाने? जबाब हमारे हाथ में है। कोर्ट अपना काम करेगा, लेकिन असली फैसला हमारा समाज लेगा। तो अगली बार, जब आप रुह अफज़ा का गिलास उठाएँ, तो सिर्फ़ ठंडक नहीं, उसमें बसी एकता को भी महसूस करें। क्योंकि यही वो स्वाद है, जो भारत को भारत बनाता है।

संत के दर्शन के लाभ

परम पूज्य सदगुरुदेव जी ने कहा कि एक बाद भगवान श्रीकृष्ण से अर्जुन ने पूछा, “संत के दर्शन से क्या लाभ होता है?” भगवान श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया, “तुम कौवे से जाकर यह प्रश्न पूछो कि संत के दर्शन से क्या लाभ होता है।”



भगवान श्रीकृष्ण द्वारा दी गई दिव्य भाषा का प्रयोग करते हुए जब अर्जुन उस कौवे ही मर गया। अर्जुन ने यह घटना श्रीकृष्ण को बताई। श्रीकृष्ण ने कहा, “कुछ दिनों की प्रतीक्षा करो, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा।”

कुछ समय बाद श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा, “अमुक स्थान पर एक हंस का जन्म हुआ है, उससे जाकर अपने प्रश्न का उत्तर जानो।” अर्जुन वहां गया और जब उसने अंतर्जन्म द्वारा उस हंस के बच्चे से वही प्रश्न पूछा, तो वह भी उसे देखकर तुरंत मर गया। अर्जुन निराश होकर फिर श्रीकृष्ण के पास आया और पूरी घटना बताई।

भगवान श्रीकृष्ण ने मुकुराते हुए कहा, “थोड़ा और प्रतीक्षा करो, तुम्हारा उत्तर मिलने वाला है।” कुछ समय पश्चात उन्होंने कहा, “अमुक स्थान पर एक गरीब के घर एक बालक ने जन्म लिया है, वहां जाकर अपने प्रश्न का उत्तर लो।” जब अर्जुन वहां गया और उस गरीब से कहा कि वह उसका पुत्र देखना चाहता है, तो वह सहर्ष बच्चे को ले आया। जैसे ही अर्जुन ने बालक को देखा, वह भी तकाल मृत्यु को प्राप्त हो गया। उस गरीब ने रोते हुए अर्जुन पर आरोप लगाया कि उन्होंने अवश्य कई तंत्र-मंत्र किया है जिससे उसका बच्चा मर गया।

अर्जुन ने क्षमा मांगते हुए कहा, “मुझे आपसे या आपके पुत्र से कोई दुश्मनी नहीं है, मैं तो भगवान श्रीकृष्ण की आज्ञा से यहां आया हूं।” इसके बाद वह अपराध भाव से लौटकर श्रीकृष्ण के पास आया और सारी बात बताई।

कुछ दिनों बाद भागवान श्रीकृष्ण ने कहा, “अब एक ब्रात्मण के घर एक शिशु ने जन्म लिया है, वहां जाकर अपने प्रश्न का उत्तर प्राप्त करो।” अर्जुन ने संकोच के साथ कहा, “यदि इस बार भी बालक मर गया तो ब्रात्मण मुझे शाप दे देगा।” श्रीकृष्ण ने उसे समझाया और वहां भेज दिया।

अर्जुन ने ब्रात्मण को पहले अपना परिचय दिया और सारी पूर्व घटनाएं बताईं। ब्रात्मण प्रश्न होकर बोला, “यदि आपके दर्शन से मेरा पुत्र मर भी गया, तो यह मेरे लिए सोनाय की बात होगी।” उसने बच्चे को बाहर लाया और अर्जुन की दृष्टि पड़ते ही वह शिशु भी मृत्यु को प्राप्त हो गया। अर्जुन ने क्षमा मांगी और लौटकर सारी बात श्रीकृष्ण को बताई।

कुछ दिन और बीते, तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा, “अब तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मिलने का समय आ गया है। अमुक राजा के घर एक राजकुमार जन्मा है, वह तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देगा।” अर्जुन ने कहा, “यदि वह भी मर गया, तो राजा क्रोधित होकर अनर्थ कर देगा।” श्रीकृष्ण ने अर्जुन को आश्वस्त किया और उसे भेजा।

राजा ने अर्जुन की बात सुनकर प्रसन्नतापूर्वक उसका स्वागत किया और कहा, “आप भगवान श्रीकृष्ण के कहने पर आए हैं, यह हमारे लिए सोनाय की बात है। यदि बच्चा मर भी गया, तो मुझे कोई शोक नहीं होगा।” जब शिशु को लाया गया, अर्जुन ने उसे देखा और वह बच्चा जीवित रहा।

तब अर्जुन ने ध्यानस्थ होकर अंतर्जन्म से उस शिशु से संवाद किया। शिशु ने बताया, “सबसे पहले जब आप कौवे से मिले थे, वह मैं ही था। फिर हंस के रूप में जन्म लिया, फिर गरीब के घर, उसके बाद ब्रात्मण के घर और अब राजा के घर जन्म लिया है। हर बार आपके दर्शन से मुझे निम्न योनि से मुक्ति मिली और उत्तर योनि प्राप्त हुई। अब

मैं श्रेष्ठ राजकुल में जन्म लेकर कृतार्थ हो गया हूं। यह सब आपके संतस्वरूप दर्शन के कारण संभव हुआ है। मैं आपके और भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं।” अर्जुन को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया और वह संतुष्ट होकर लौट आया।

अध्यात्म का प्रबल माध्यम है संगीत



संगीत का आनंद लेने के लिए पूर्ण समर्पण भाव का होना अत्यंत आवश्यक है। संगीत के माध्यम से बीजमंत्र का देना और ग्रहण करना, दोनों ही अलौकिक क्रियाएं हैं।

एक बार बादशाह अंकबर के दरबार में एक संगीतज्ञ आया। बादशाह ने उससे अनुरोध किया कि वह अपने संगीत का प्रदर्शन करे, लेकिन उसने एक शर्त रख दी। सुनने वालों में जिसकी भी गर्दन हिलेगी, उसे काट दिया जाएगा। जब वह गाने लगा तो कुछ लोग उठकर चले गए। एक व्यक्ति तलवार हाथ में लेकर खड़ा था, जिसे देखकर कई लोग भयभीत होकर भाग गए।

फिर भी कुछ श्रोत बैठे ही रहे। तब उस संगीतज्ञ ने कहा, “केवल यही लोग हैं जो संगीत के भाव को समझते हैं। अतः आप सैनिक को आज्ञा दें कि वह अपनी तलवार म्यान में डाल ले। अब मैं इन्हें संगीत सुनाऊंगा और ये उसका आनंद लेंगे, दूसरे भी, और उनकी गर्दनें भी हिलेंगी।”

बृद्धावन के बर्नी में, दूर-दूर तक बनी झाँपड़ियों और आश्रमों में आज भी अनेक संत-महात्मा रागों के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण और मां राधा की स्तुति करते हुए मिल जाते हैं। वे समय के अनुसार रागों का गायन करते हैं और उस भाव में पूर्णतः मस्त रहते हैं। वहां आर्व शार्ति का अनुभव होता है। जब भी मेरा मन होता है, मैं वहां चला जाता हूं और उसे सुनता हूं। वहां से लौटने का मन ही नहीं करता। कल-कल बहती नदी के किनारे जब रागों का गायन होता है, तो संपूर्ण वातावरण एक विशेष आभा और ताजगी से भर जाता है।

केवल पुस्तकीय ज्ञान से ही पंडित नहीं बनते हैं

एक बार तीन ब्राह्मण एक नाव में बैठकर नदी पार कर रहे थे। वे तीनों शास्त्रों की बातों में व्यस्त थे। थोड़ी दूर जाने के बाद एक पंडित ने नाविक से पूछा कि हे नाविक तुमने बेद पढ़े हैं? वह नाविक बोला, यह क्या होता है, मैं नहीं जानता, मैंने कोई बेद नहीं पढ़े। पंडित ने कहा कि तुम्हारी एक चौथाई जिंदगी व्यर्थ हो गई। ऐसा कहकर वे पुनः वार्तालाप में मन हो गये। थोड़ी दूर जाने के बाद दूसरे पंडित ने नाविक से पूछा कि क्या तुमने उपनिषद पढ़े हैं? नाविक ने कहा नहीं, मैंने उपनिषद नहीं पढ़े। इस पर दूसरे पंडित ने कहा कि तुम्हारी दो चौथाई जिंदगी व्यर्थ हो गई। इसके बाद फिर वे अपनी वार्तालाप में मन हो गये। थोड़ी दूर जाने के बाद नाविक ने उन पंडितों से पूछा कि क्या आपको जैवना आता है? उन तीनों ने कहा नहीं, हमें तो पानी से भी डर लगता है। नाविक ने कहा कि हे ब्रात्मणों! अब आप सबकी पूरी जिंदगी व्यर्थ होने जा रही है क्योंकि नदी में भंवर बहकर इन आंओं और आ रहा है। मैं तो पानी में तैरकर पार हो जाऊंगा वे किया जानता हूं, और वह है-तैरना। लेकिन आपको इसी भंवर में प्राण त्यागने होंगे। आपके बेद, उपनिषद, पुराण के ज्ञान यहां काम नहीं आएंगे। इतना कहकर वह नदी में कूद गया और नाव भंवर में फंस गए। इसके फलस्वरूप मैं पंडितगण भी नदी के भंवर में फंसकर मृत्यु को प्राप्त हो गए।



जज ने सड़क किनारे सुनी बुजुर्ग दंपति की गुहार

आँटो में मिला न्याय



@ एड. रिकू विश्वकर्मा

तेलंगाना के निजामाबाद से एक ऐसी तस्वीर सामने आई है, जिसने इंसानियत और इंसाफ की एक अनोखी मिसाल पेश की। यहाँ 28 अप्रैल को बोदनकोट में एक बुजुर्ग दंपति अपनी सुनवाई के लिए पहुंचे थे। लेकिन इनकी कहानी कोई आम कोर्ट रूम डामा जैसी नहीं थी। ये दोनों रायकर गांव से ऑटो रिक्षा में आए थे, मगर उम्र और कमज़ोरी ने इनके पैरों को ऐसा जकड़ा कि कोर्ट रूम तक जाना इनके लिए नामुमकिन हो गया। अब इंसाफ की आस लिए ये ऑटो में ही बैठे रहे। तभी कोर्ट के जज को इसकी जानकारी मिली। जज साहब ने जो किया, वो दिल जीत लेने वाला था।

दरअसल, कंतापू नादपी गंगाराम और कंतापू नादपी गंगाराम अपने एक केस के सिलसिले में 28 अप्रैल को बोधन कोर्ट पहुंचे थे। जूनियर फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट एसएमप्ली साई शिवा को जब इसकी सूचना मिली, तो वे अपनी कुर्सी छोड़कर कोर्ट रूम से बाहर निकले और सीधे ऑटो के पास पहुंचे। वहाँ, सड़क किनारे उन्होंने बुजुर्ग दंपति की बात सुनी।

मामला था दहेज उत्तीर्ण का, जो इनके खिलाफ दर्ज था। जज साहब ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनीं,



दस्तावेज़ देखे और फिर फैसला सुनाया।

फैसला: केस खारिज। सायम्मा और गंगाराम को इंसाफ मिला वो भी बिना कोर्ट की सीढ़ियाँ चढ़े।

यह छोटी सी घटना सोशल मीडिया पर आग की तरह फैल गई। कोर्ट के बाहर की एक तस्वीर वायरल हो गई। लोग जज के बारे में जानने लगे। Bar & Bench की रिपोर्ट के मुताबिक, जज शिवा ने हैदराबाद के महात्मा गांधी लॉ कॉलेज से कानून की पढ़ाई पूरी की। साल 2023 में उन्होंने सिविल जज की परीक्षा उत्तीर्ण की रिपोर्ट के

मुताबिक, परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने कहा था, "बचपन से ही मेरा ज्ञान कानूनी मामलों की ओर रहा है। मैंने पीड़ित और आरोपी के बीच खड़े होकर जज की भूमिका चुनी है। मैं पीड़ितों को न्याय दिलाने के साथ-साथ मामलों का त्वरित निपटारा करने के लिए भी प्रतिबद्ध हूं। मैं एक अदालत के जज का पद संभालने के लिए उत्साहित हूं।"

सायम्मा और गंगाराम मामला क्या है ?

कोर्ट के रिकॉर्ड के मुताबिक, कंतापू सायम्मा और

कंतापू नादपी गंगाराम पर 2021 में तेलंगाना पुलिस द्वारा भारतीय दंड संहिता की धारा 498A के तहत वैवाहिक क्रूरता का मामला दर्ज किया गया था। दिसंबर 2021 में उनके खिलाफ चार्जशीट दाखिल की गई, जिसके बाद बोधन कोर्ट में मुकदमा चला।

करीब 30 सुनवाइयों के बाद कोर्ट ने 22 अप्रैल को फैसला सुनाने की बात कही थी। रिपोर्ट के अनुसार, एक महीने पहले कोर्ट को बताया गया कि दंपती एक दुर्घटना का शिकार हो गए हैं और चलने में असमर्थ हैं। उनकी स्थिति को देखते हुए, जज ने 30 अप्रैल को सड़क पर ही इस मामले में फैसला सुनाया।

बुजुर्ग दंपती के खिलाफ उनकी बहु द्वारा दर्ज कराया गया यह मामला झूठा पाया गया। कोर्ट ने आदेश में बताया कि आरोपी नंबर एक और आरोपी नंबर दो, IPC की धारा 498A के तहत दंडनीय अपराध के लिए दोषी नहीं पाए गए। जज शिवा का यह कदम सिर्फ एक केस का फैसला नहीं, बल्कि एक मिसाल है।

उन्होंने दिखाया कि इंसाफ की राह में अगर इंसानियत साथ हो, तो कोई भी बाधा बड़ी नहीं होती। लेकिन सवाल यह है कि क्या हार कोर्ट में ऐसा ही जज मिलेगा? क्या सिस्टम बदलेगा ताकि सायम्मा और गंगाराम जैसे लोग बिना सड़क पर सुनवाई के, सम्मानपूर्वक न्याय पा सकें?

क्यों पुर, बाद और गंज हमारे शहरों के नाम में होते हैं ? शहरों के नाम के पीछे की दिलचस्प कहानी

@ अंकित कुमार

कनपुर, नागपुर, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, जबलपुर, रायपुर ये सभी हमारे देश के बड़े शहरों के नाम हैं। इनमें एक चीज़ कॉमन है 'पुर'। अब रुकिए, मैं आपको एक और लिस्ट बताता हूँ। इलाहाबाद, गाजियाबाद, हैदराबाद, फरुखाबाद, मुरादाबाद, अहमदाबाद, फिरोजाबाद — इन शहरों के नामों में भी एक चीज़ कॉमन है 'बाद' या 'आबाद'।

आपने भी नोटिस किया होगा कि हमारे देश में ऐसे सैकड़ों शहर हैं जिनके नामों में ये दो प्रत्यय यानी 'पुर' और 'बाद/आबाद' आते हैं। लेकिन क्या आपको इन दोनों का मतलब पता है? आज आपको इन दोनों शब्दों या प्रत्ययों का मतलब पता लगने वाला है।

पुर का मतलब क्या होता है?

'पुर' एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है किला। इस शब्द का उल्लेख हमें ऋग्वेद में मिलता है, जिसे भारत का सबसे प्राचीन ग्रंथ माना जाता है।

ऋग्वेद में 'पुर' उन स्थानों के लिए इस्तेमाल होता था जो या तो शहर थे या किले। अब सोचिए, यह शब्द कितना पुराना है। ऋग्वेद को माना जाता है कि वह करीब 1500 ईसा पूर्व का ग्रंथ है, यानी आज से करीब 3500 साल पुराना। समय के साथ यह परंपरा आगे बढ़ती गई। महाभारत काल में भी शहरों के नाम में 'पुर' जोड़ा जाता था, जैसे हस्तिनापुर। मध्यकाल में जब किसी राजा को कोई नया शहर बसाना होता था, तो वह अपने नाम के साथ 'पुर' जोड़ देता था।

जैसे जयपुर को राजा जयसिंह ने बसाया, इसलिए इसका नाम पड़ा जयपुर। कानपुर का नाम भी सचेंडी के राजा हिंदू सिंह ने रखा था, क्योंकि वे खुद को भगवान् कृष्ण यानी 'कान्हा' का वंशज मानते थे। तो अब आपको यह समझ में आ गया होगा कि 'पुर' शब्द का इस्तेमाल कैसे शुरू हुआ और यह शहरों के नाम का हिस्सा कैसे बना।

अब आते हैं 'आबाद' या 'बाद' पर

जैसे कि इलाहाबाद, मुरादाबाद, हैदराबाद आदि यहाँ तक कि पाकिस्तान में इस्लामाबाद और बांग्लादेश में जलालाबाद भी हैं तो 'आबाद' शब्द अखिर आया कहाँ से?

दरअसल, 'आबाद' एक फारसी शब्द है। इसमें 'आब' का मतलब होता है — पानी। और पूरा शब्द 'आबाद' का मतलब होता है — ऐसी जगह जहाँ पानी हो, ताकि वहाँ खेती-बाड़ी की जा सके और लोग बस सकें। उदाहरण के लिए, मुरादाबाद रामगंगा नदी के किनारे है, इसलिए उसके नाम में 'आबाद' जोड़ा गया।

इलाहाबाद गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगम पर बसा है इसलिए उसका नाम भी 'आबाद' से जुड़ा।

इतिहासकार यह भी मानते हैं कि मुगल काल में जब बादशाह किसी शहर को बसाते थे, तो अपने नाम के साथ 'आबाद' जोड़कर शहर का नाम रखते थे।

जैसे फिरोजाबाद, जिसे फिरोजशाह के नाम पर बसाया था। इस तरह 'आबाद' न सिर्फ पानी या



बसावट को दर्शाता है, बल्कि उसमें शाही पहचान भी जुड़ जाती थी।

'गंज' शब्द का मतलब

आपने कई शहरों या कस्बों के नाम में 'गंज' देखा होगा। जैसे हजरतगंज (लखनऊ), दरियागंज (दिल्ली), मलका गंज, रॉबर्ट्सगंज आदि। क्या आप जानते हैं कि 'गंज' का मतलब क्या होता है?

'गंज' शब्द की उत्पत्ति इंडो-ईरानियन भाषाओं में माने जाने वाले मीडियन भाषा समूह से मानी जाती है। इसका अर्थ होता था खजाना रखने की जगह। बाद में इस शब्द का अर्थ बदलता गया और इसे उन जगहों के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा जहाँ बाजार लगता था, या भीड़भाड़ होती थी। संस्कृत में भी इस शब्द का उल्लेख मिलता है। इसे 'गज्ज' से निकला हुआ माना जाता है।

जैसे दरियागंज का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि पहले यह यमुना नदी के किनारे पर स्थित एक बाजार था। दिल्ली के सदर बाजार में भी एक जगह है डिल्लीगंज, जो आज भी बर्तनों के बाजार के लिए मशहूर है। इसलिए, जब आप अगली बार 'गंज' नाम सुनें, तो समझिए कि वह इलाका कभी खजाने की जगह था या आज भी व्यापार का केंद्र है।

IPL की चकाचौंध क्या कर सकती है

भारत का भविष्य दोषन?



शाम के साढ़े सात बजे। स्टेडियम में रंग-टकटकी लाइटें। लाखों लोग टीवी पर चमकता है, और विज्ञापनों की बाढ़ में अरबों रुपये बहते हैं। ये हैं इंडियन प्रीमियर लीग (IPL) — भारत का सबसे बड़ा तमाशा। लेकिन इस चकाचौंध के बीच एक सवाल गूंजता है: क्या ये पैसा सिर्फ मनोरंजन के लिए है, या इससे भारत का भविष्य भी बन सकता है? बेंगलुरु के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस (IISc) के प्रोफेसर मयंक श्रीवास्तव ने एक ऐसा आइडिया दिया है, जो दिल को छूता है और दिमाग को झकझोरता है। उनका कहना है: अगर IPL के मुनाफे का एक हिस्सा टैक्स करके रिसर्च और इनोवेशन में लगाया जाए, तो भारत न सिर्फ अमेरिका, चीन, जर्मनी जैसे देशों से आगे निकल सकता है, बल्कि एक नई वैज्ञानिक क्रांति की नींव रख सकता है।

IPL: पैसों का झरना, सपनों का मेला

IPL सिर्फ एक क्रिकेट टूर्नामेंट नहीं, बल्कि एक आर्थिक ताकत है। 2023 में, बोर्ड ऑफ कंट्रोल फॉर क्रिकेट इन इंडिया (BCCI) ने IPL से 11,770 करोड़ की कमाई की, जिसमें 5,120 करोड़ का सरप्लस था। 2025 में ये आंकड़ा 12,000 से 13,500 करोड़ तक पहुंचने की उम्मीद है। ये पैसा आता है मीडिया राइट्स, स्पॉन्सरशिप, और टिकटों से।

लेकिन चौंकाने वाली बात? BCCI को इस मुनाफे पर टैक्स नहीं देना पड़ता। क्यों? क्योंकि इसे “चैरिटेबल” ऑर्गनाइजेशन माना जाता है। IPL फ्रैचाइजी, जो अरबपतियों के पास है, भी टैक्स छूट का फायदा उठाती है। प्रोफेसर श्रीवास्तव कहते हैं: अगर सिर्फ BCCI के मुनाफे पर 40% टैक्स लगे, तो तीन साल में 15,000 करोड़ जमा हो सकते हैं। फ्रैचाइजी के मुनाफे

(800—1,200 करोड़ सालाना) को जोड़ें, तो हर साल 6,000 करोड़ मिल सकते हैं।

सोचिए, 6,000 करोड़! ये पैसा 10 नए IIT खोल सकता है। ये एक नेशनल डीप-टेक फंड बना सकता है। ये उन लैब्स को जिंदा रख सकता है, जहां वैज्ञानिक दिन-रात भारत के लिए नई टेक्नोलॉजी बनाने में जुटे हैं। IPL की इस चमक को देखकर लगता है, जैसे कोई झरना बह रहा हो—लेकिन इसका पानी अभी सिर्फ मनोरंजन की नदियों में जा रहा है। क्या हम इसे भविष्य की खेती के लिए मोड़ सकते हैं?

साइंस की पुकार: एक भूला हुआ सपना

IPL की चमक के दूसरी तरफ है साइंस की दुनिया। ये दुनिया, जहां लैब्स में बल्ब टिमिटाते हैं, क्योंकि बिजली का बिल बाकी है। जहां युवा रिसर्चर रातें जागकर नई दवाइयां, नई टेक्नोलॉजी बनाने की कोशिश करते हैं, लेकिन फंडिंग की कमी उनकी राह रोक देती है। भारत अपनी GDP का सिर्फ 0.7% रिसर्च पर खर्च करता है। तुलना करें: अमेरिका और चीन 3—4% खर्च करते हैं। 2022 में भारत का कुल R&D खर्च था 1.27 लाख करोड़। इसमें सरकार का हिस्सा सिर्फ 40%। बाकी दुनिया में, सरकारें और प्राइवेट सेक्टर मिलकर साइंस को पंख देते हैं। लेकिन भारत में? हम तुरंत रिटर्न की उम्मीद करते हैं। बिजनेस मैन को प्रॉफिट चाहिए, वो भी अभी। साइंस, जो सालों की मेहनत मांगती है, उसे “हाई-रिस्क, लो-रिटर्न” समझा जाता है।

प्रोफेसर श्रीवास्तव का कहना है: “भारत के पास पैसा है। टैलेंट है। कभी है तो बस विजन की।” अमेरिका ने DARPA बनाकर मिलिट्री डिफेंस टेक्नोलॉजी में क्रांति ला दी। चीन ने ‘Made in China 2025’ से दुनिया को चौंका दिया। और हम? हम IPL की तालियों में खोए

हैं। साइंस की पुकार सुनने का वक्त है। वो पुकार, जो कहती है: “मुझे मौका दो, मैं भारत को सितारों तक ले जाऊंगा।”

सपना जो हकीकत बन सकता है

कल्पना करें: एक भारत, जहां IPL की कमाई से बने नए IITs में बच्चे AI और बायोटेक सीख रहे हैं। जहां स्टार्टअप्स नई दवाइयां, नए रोबोट्स बना रहे हैं। जहां हर गाँव में सोलर पैनल और स्मार्ट टेक्नोलॉजी पहुंच रही है। ये सपना असंभव नहीं। 15,000 करोड़ का फंड इसे हकीकत बना सकता है। श्रीवास्तव का आइडिया सिर्फ टैक्स की बात नहीं। ये एक सोच की बात है। वो कहते हैं: “मनोरंजन जरूरी है, लेकिन प्राथमिकता और भी जरूरी है।” IPL भारत की ताकत है। ये हमें एक जुट करता है, गर्व देता है। लेकिन क्या हम इसे और बड़ा मक्सद नहीं दे सकते? क्या BCCI और फ्रैचाइजी साइंस के लिए थोड़ा-सा योगदान नहीं दे सकते?

हाल ही में, बजट 2025-26 में सरकार ने R&D के लिए टैक्स ब्रेक्स और फंडिंग की बात की। अडानी ग्रुप ने IISc के साथ मिलकर RSI-India प्रोग्राम शुरू किया। ये कदम सही हैं, लेकिन काफी नहीं। IPL का पैसा इन कोशिशों को रॉकेट की तरह उड़ान दे सकता है। सोचिए, अगर BCCI खुद एक टैक्स क्यूबूटर फंड बनाए? या फ्रैचाइजी स्टूडेंट्स के लिए स्कॉलरशिप दें? ये छोटे-छोटे कदम भारत को वैज्ञानिक सुपरपावर बना सकते हैं।

युनिटियां और उम्मीद: एक नया रास्ता

हर बड़े सपने की राह में रुकावटें आती हैं। IPL को टैक्स करना आसान नहीं। क्रिकेट भारत का धर्म है। BCCI की ताकत और फैस का प्यार इसे छूने से रोकता है। कुछ लोग कहेंगे: “IPL से टैक्स लेने से इसकी चमक कम हो जाएगी।” कुछ और कहेंगे: “पहले से ही टिकटों

पर 18% GST और प्लेयर्स की सैलरी पर TDS है। और कितना टैक्स?” इन सवालों का जवाब है संतुलन। शायद 40% टैक्स की जगह 20% से शुरू करें। या BCCI को टैक्स छूट के बदले रिसर्च में इनवेस्ट करने को कहें। पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप एक रास्ता हो सकता है। लेकिन सबसे बड़ी चुनौती है हमारी सोच। हम तुरंत रिजल्ट चाहते हैं। साइंस को वक्त चाहिए, धैर्य चाहिए। क्या हम इसके लिए तैयार हैं?

X पर लोग श्रीवास्तव के आइडिया को सपोर्ट कर रहे हैं। @CACHirag ने लिखा: “IPL की 6,700 करोड़ कमाई पर टैक्स क्यों नहीं?” @ningoyal ने कहा: “15,000 करोड़ से 10 IIT खुल सकते हैं।” ये आवाजें दिखाती हैं कि लोग बदलाव चाहते हैं। लेकिन बदलाव तब आएगा, जब हम सब मिलकर प्राथमिकताएं तय करेंगे।

तालियों से सितारों तक

IPL का स्टेडियम फिर से गूंज रहा है। बल्ला चमक रहा है। भीड़ चिल्ला रही है। लेकिन इस बार, मेरे दिमाग में एक और तस्वीर है। एक लैब, जहां एक युवा वैज्ञानिक नई बैटरी बना रहा है, जो गाँवों को रोशनी देगी। एक क्लासरूम, जहां बच्चे कोडिंग सीख रहे हैं, जो भारत को डिजिटल सुपरपावर बनाएंगे।

प्रोफेसर श्रीवास्तव का सपना सिर्फ टैक्स की बात नहीं। ये एक नई सोच की बात है। ये उस भारत की बात है, जो तालियों और साइंस, दोनों को गले लगाए। ये उस भारत की बात है, जो मनोरंजन की चमक से भविष्य का सूरज बनाए। आइए, इस सवाल पर सोचें: हम क्या पुरस्कृत करना चाहते हैं? तुरंत की तालियां, या आने वाली पीढ़ियों का गर्व? जवाब हमारी पसंद में है। जवाब हम में है।

जब अखबार के पन्जे ने बढ़ायी किस्मत

@ उमाकांत यादव

विवेक को स्टेशन पर छोड़ने के बाद राहुल बहुत दुखी मन से घर लौट रहा था। आज उसका मन बेहद भारी था, क्योंकि उसका बचपन का दोस्त विवेक सिविल सर्विसेज की तैयारी के लिए दिल्ली जा रहा था।

दोनों साथ-साथ पले-बढ़े, खेले, और जवान हुए थे। वे कभी इतने लंबे समय के लिए एक-दूसरे से अलग नहीं हुए थे। राहुल को अपने दोस्त के जाने का दुःख तो था ही, लेकिन उससे भी बड़ा दुःख यह था कि वह सपना, जिसे दोनों ने बचपन से साथ देखा था, कलेक्टर बनने का.. अब अधूरा लग रहा था। विवेक तो उस सपने को पूरा करने के लिए दिल्ली जा रहा था, लेकिन राहुल की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह घर से दूर रहकर पढ़ाई कर सके।

राहुल के पिता एक किसान थे और बड़ी मुश्किल से दो वक्रत की रोटी जुटा पाते थे। ऐसी स्थिति में वे राहुल को किसी बड़े शहर में पढ़ाई के लिए भेजने में असमर्थ थे।

स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद राहुल के पिता ने साफ शब्दों में कह दिया था, “अब तक मैं जैसे-तैसे तेरी पढ़ाई और घर का खर्च चलाता रहा हूँ, लेकिन अब मुझसे और नहीं होगा। अब आगे की जिम्मेदारी तुझे खुद ही उठानी होगी।” अब राहुल के पास पढ़ाई का समय नहीं था। उसे खेती में पिता की मदद करनी पड़ती थी और घर के बाकी काम भी उसी के जिम्मे थे।

आज जब वह विवेक को स्टेशन छोड़कर लौट रहा था, तो उसे लग रहा था जैसे उसका कलेक्टर बनने का सपना अब सिर्फ एक सपना ही रह जाएगा। रास्ते भर वह यही सोचता रहा था .. “काश, मेरे पिता के पास भी इतना पैसा होता कि मैं भी विवेक के साथ दिल्ली जाकर यूपीएससी की तैयारी करता और अपने माता-पिता का नाम रोशन करता।”

अपना सपना आंखों के सामने टूटता देख उसकी आंखें भर आईं, लेकिन वह कर भी क्या सकता था? उसके मन में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के प्रति गहरी निराशा और क्रोध भर गया। वह सोच रहा था कि “क्या कोई गरीब पढ़ नहीं सकता? क्या शिक्षा सिर्फ अमीरों और पैसे वालों का

अधिकार है?”
आज शिक्षा एक व्यवसाय बन चुकी है। कोचिंग संस्थानों की फीस इतनी अधिक है कि किसी गरीब के लिए उसे वहन कर पाना संभव नहीं। यही सब सोचते हुए राहुल घर पहुँचा और उदास मन से खेत में काम करने चला गया, लेकिन उसका मन काम में बिल्कुल नहीं लग रहा था। वह बार-बार अपनी किस्मत को कोस रहा था।

समय बीतता गया। लागभग छह महीने बाद विवेक दिल्ली से वापस गांव आया, लेकिन अब वह पहले जैसा नहीं रहा था। बुरी संगति में पड़कर वह कई प्रकार के नशों का आदी बन चुका था।

राहुल ने उसे बहुत समझाया कि पढ़ाई पर ध्यान दो, नशा करके खुद को बर्बाद मत करो, लेकिन विवेक पूरी तरह डूब चुका था। कुछ दिन गांव में रहने के बाद वह फिर दिल्ली चला गया, और राहुल अपने रोजमर्ग के काम में लग गया।

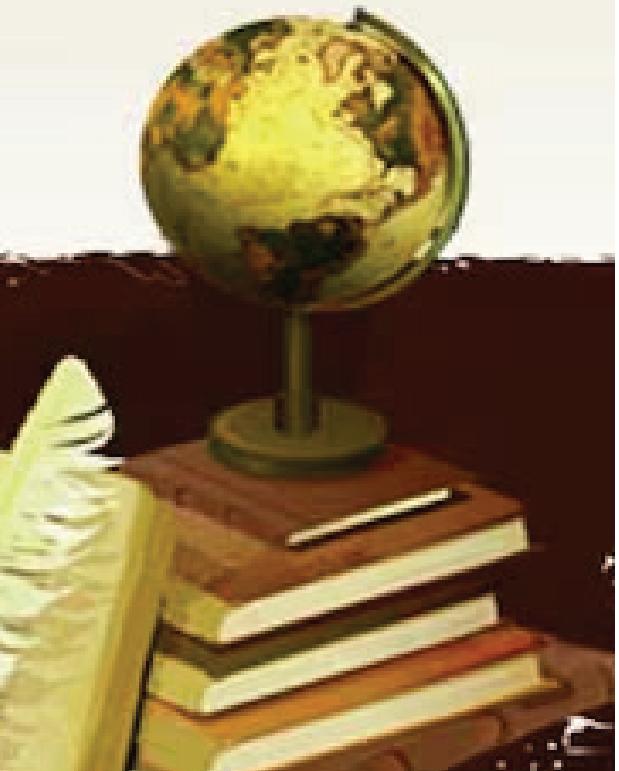
एक दिन राहुल खेत में काम कर रहा था। वह जल्दी-जल्दी में घर से खाना खाकर नहीं आया था, इसलिए भूख लग रही थी। उसकी जेब में कुछ रुपये पड़े थे। उसने नजदीक की चाय की टप्पी से चाय और समोसा लिया और वहीं बैठकर खाने लगा।

चाते-खाते उसकी नजर उस अखबार के टुकड़े पर पड़ी, जिसमें चायवाले ने समोसा लपेटा था। उस पर डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की तस्वीर थी, और नीचे उनकी जयंती के अवसर पर उनके जीवन की कुछ बातें लिखी थीं।



हा। लाईक
राहुल पहले से ही डॉ. कलाम के बारे में जानता था, फिर भी वह लेख पढ़ने लगा। उसमें लिखा था कि कैसे वे एक गरीब परिवार में जन्मे, बचपन में अखबार बांटने का काम किया, कितने संघर्षों के बावजूद पढ़ाई नहीं छोड़ी, और आगे चलकर भारत के मिसाइल मैन बन गए। यह लेख पढ़ने के बाद राहुल थोड़ी देर तक वहीं बैठा रहा। फिर अचानक उठा, चाय वाले को पैसे दिए, और खेत की ओर चल पड़ा। लेकिन अब उसकी आंखों में एक नई चमक थी। उसके पांव मानो हवा में उड़ रहे थे, और उसका चेहरा आत्मविश्वास से भरा था।

डॉ. कलाम की कहानी ने उसमें एक नई ऊर्जा भर दी थी। वह सोच रहा था। “उनके संघर्षों के सामने तो मेरी परेशानियाँ कुछ भी नहीं हैं। अगर वे कर सकते हैं, तो मैं क्यों नहीं?”



ChatGPT से पूछे गए हर सवाल की होती है पर्यावरण पर मार! क्या आपका मेल धरती को गर्म कर रहा है?

@ सुमित शुक्ला

आज हम जिसपे बात करने जा रहे हैं वो एक चौंकाने वाला लेकिन ज़रूरी सवाल है कि क्या है AI चैटबॉक्स और धरती के तापमान का रिश्ता? जब हम ChatGPT जैसे टूल्स से ईमेल या कहानियां लिखते हैं तो उसका असर सिर्फ़ स्क्रीन तक नहीं रहता। बल्कि वह हमारे पर्यावरण पर भी असर डालता है। कैसे हर सवाल के जवाब के पीछे पानी और बिजली की बड़ी खपत होती है। और कैसे यह ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ावा देती है। इन बातों को आसान भाषा में समझिए। समाधान तकनीकों को रोकना नहीं है। बल्कि ज़िम्मेदारी से उसका इस्तेमाल करना है।

जब हम जलवायु परिवर्तन यानी ग्लोबल वार्मिंग के बारे में सोचते हैं, तो हमारे दिमाग में कारखानों से निकलता धुआँ, ट्रैफिक जाम में फ़ंसी गाड़ियाँ या जंगल में लगी आग की तस्वीर आती है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि जब आप एक एआई चैट बॉट से सवाल पूछते हैं, जैसे 'मेरे लिए एक ईमेल लिखो' या 'कोई कहानी सुनाओ', तो वह भी धरती को गर्म कर सकता है? आखिर, ऐसा कैसे होता है? क्या है एआई चैट बॉट और ग्लोबल वार्मिंग का कनेक्शन? कैसे आपका मेल लिखना धरती के टैपरेचर को बढ़ाता है? क्या इसका कोई सलूशन है?

हम लंबे समय से सुनते आ रहे हैं कि हम सभी को ग्लोबल वार्मिंग से खतरा है, लेकिन आजकल के बढ़ते तापमान, पिघलते ग्लेशियर और नई-नई बीमारियों से साबित हो गया है कि अब यह बातें सिर्फ़ किताबों में नहीं रह गई हैं। अब हम इस आपदा के बीच में हैं। हम सभी जानते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग धरती के रिसोर्सेंज का बेरोकटोक इस्तेमाल करने से होता है, लेकिन कौन सोच सकता था कि टेक्नोलॉजी भी इसकी भागीदार होगी? जी हाँ, टेक्नोलॉजी। आप जो फटाक से पिज्जा ऑर्डर कर लेते हैं, नौ मंजिल की बिल्डिंग यूँ ही पलक झपकते चढ़ जाते हैं और एआई से किसी भी चीज की जानकारी पूछ लेते हैं, सब कुछ ग्लोबल वार्मिंग में साझेदारी निभात है।

हर बार जब आप चैट जीपीटी जैसे एआई मॉडल से कुछ पूछते हैं, तो उस सवाल का जवाब तैयार करने के लिए एक पूरा सिस्टम काम में लग जाता है। ये सिस्टम कोई जादू नहीं है। इसके पीछे कंप्यूटर सर्वर होते हैं जो भारी-भरकम कैलकुलेशंस करते हैं। एआई चैट बॉट और उससे होने वाले प्रभाव के बारे में बात करेंगे, लेकिन उससे पहले जानते हैं कि एआई काम कैसे करता है और ये किस तरह से हमारी ज़िंदगी

आसान बना रहा है।

एआई एक ऐसी तकनीक है जो मशीनों को इंसानों की तरह सोचने, समझने और डिसीजन लेने लायक बनाती है। एआई चैट बॉट जैसे चैट जीपीटी यूर्जस के सवालों को समझ कर ऑटोमैटिक जवाब देते हैं। ये सिस्टम मशीन लर्निंग और लैंग्वेज प्रोसेसिंग टेक्निक्स पर आधारित होते हैं।

एआई आज हमारे जीवन को कई तरह से आसान बना रहा है। मेडिसिन की फील्ड में ये रिपोर्ट्स का एनालिसिस कर डॉक्टर्स को सटीक निर्णय लेने में मदद करता है। एजुकेशन की फील्ड में ये छात्रों को पर्सनल गाइडेंस देता है। क्लाइंट सर्विसिंग में चैट बॉट 24*7 सहायता प्रदान करते हैं, जिससे कंपनियों का समय और संसाधन दोनों बचते हैं। ऑफिस के कामों में ईमेल, रिपोर्ट या मीटिंग नोट्स जैसे कामों को मिनटों में पूरा कर देता है ये

कंट्रोल और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में भी एआई का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है।

एआई के सर्वर्स बड़े-बड़े डेटा सेंटर्स में रखे होते हैं और जाहिर सी बात है, ये बिजली की खपत भी करते हैं। जब सर्वर्स इतनी तेज गति से काम करते हैं, तो वे गर्म हो जाते हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे आपका मोबाइल या लैपटॉप गर्म हो जाता है जब आप लंबे समय तक वीडियो देखते हैं। अब सवाल उठता है कि इस गर्मी का किया क्या जाए? इन्हें ठंडा रखने के लिए डेटा सेंटर्स बड़े पैमाने पर पानी और बिजली का इस्तेमाल करते हैं। पानी का उपयोग कूलिंग टावरों के जरिए किया जाता है, जो गर्म मशीनों को ठंडा करते हैं और यहाँ से कहानी गंभीर होती है।

एक रिसर्च के मुताबिक, ओपन एआई का चैट जीपीटी मॉडल लगभग 519 मिलीलीटर पानी खर्च करता है, सिर्फ़ एक 100 शब्दों का ईमेल लिखने में। यानी एक छोटी पानी की बोतल

जितना। अगर आप हर हफ्ते एक बार चैट जीपीटी से ईमेल लिखते हैं, तो साल भर में 27 लीटर पानी खर्च हो जाता है। अब सोचिए, अगर भारत का हर 10 में से एक व्यक्ति, यानी लगभग 14 करोड़ लोग ऐसा करें, तो साल में करीब 370 करोड़ लीटर पानी सिर्फ़ एआई से बातचीत करने में खर्च हो जाएगा और ये सिर्फ़ पानी की कहानी है। बिजली बनाने में अगर कोयले जैसे पारंपरिक इंधनों का इस्तेमाल होता है, तो हर बातचीत, हर सवाल के साथ एनवायरमेंट में और ज्यादा ग्रीन हाउस बढ़ती है और इस तरह हर थोटा-छोटा डिजिटल कदम पृथ्वी को थोड़ा और गर्म कर रहा है।

तो सवाल ये है कि क्या हमें एआई का इस्तेमाल बंद कर देना चाहिए? बिल्कुल नहीं। तकनीक को दोषी ठहराना समाधान नहीं है। समाधान है ज़िम्मेदारी से इस्तेमाल। जरूरत इस बात की है कि हम सब, कंपनियां, नीति निर्माता और आम लोग मिलकर तकनीक को टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल दिशा में आगे बढ़ाएँ, क्योंकि तकनीक का असली विकास वही है जो इंसानियत के साथ-साथ धरती का भी ख्याल रखे।



एआई।
एंटरटेनमेंट,
बैंकिंग, खेती, ट्रैफिक

CZI ने खींचा हाथ, 550 बच्चों का भविष्य अधर में ज़करबर्ग का वादा टूटा

पूर्वी पालो अल्टो, कैलिफोर्निया। एक छोटा सा शहर, जहाँ सिलिकॉन वैली की चकाचौंथ के बीच गरीबी और उम्मीदें साथ-साथ चलती हैं। यहाँ की गलियों में एक स्कूल था—द प्राइमरी स्कूल। मुफ्त पढ़ाई, मुफ्त इलाज, और बच्चों के लिए एक सुरक्षित ठिकाना। मार्क ज़करबर्ग और उनकी पत्नी प्रिसिला चान ने 2016 में इसे शुरू किया था। उनके चान ज़करबर्ग इनिशिएटिव (CZI) ने वादा किया था कि ये स्कूल गरीब बच्चों की ज़िंदगी बदलेगा। लेकिन 2025 में, एक सुबह, माता-पिता को बुलाया गया। खबर सुनकर उनके पैरों तले ज़मीन खिसक गई: स्कूल 2026 में बंद हो जाएगा।

न्यूबिया अल्वाराडे, एक माँ, जिनका ऑटिस्टिक बेटा इस स्कूल पर निर्भर था, ने कहा, “ये स्कूल हमारा परिवार था। अब क्या होगा?” सवाल हवा में लटक गया। क्यों बंद हो रहा है ये स्कूल? ज़करबर्ग, जिनकी दौलत 200 बिलियन डॉलर से ज़्यादा है, ने पैसा देना क्यों रोक दिया? क्या ये सिर्फ़ पैसे की बात है, या कुछ और? ये कहानी सिर्फ़ एक स्कूल की नहीं—ये विश्वास, वादों, और टूटे सपनों की कहानी है।

एक स्कूल, एक सपना

पूर्वी पालो अल्टो में ज़िंदगी आसान नहीं। सिलिकॉन वैली की ऊँची इमारतें पास ही हैं, जहाँ मेटा जैसी कंपनियाँ अरबों कमाती हैं। लेकिन यहाँ के लोग किराए के बोझ तले दबे हैं। घर छोड़कर जाना पड़ता है। ऐसे में द प्राइमरी स्कूल एक चमत्कार था। 1550 बच्चे, जिनमें 95% अशेत या लैटिनो थे, यहाँ मुफ्त पढ़ते थे। स्कूल सिर्फ़ किताबें नहीं देता था—डॉक्टर, दाँतों का इलाज, और माता-पिता के लिए मेटल हेल्थ सपोर्ट भी। प्रिसिला चान, जो खुद डॉक्टर हैं, ने इसे “टॉक्सिक स्ट्रेस” से लड़ने का तरीका बताया। गरीबी की बजाए से बच्चों पर पड़ने वाला तनाव कम करना था मकसद।

एस्टेला पेरेज, एक माँ, बताती हैं, “मेरे बच्चे को दाँतों का इलाज स्कूल में ही मिलता था। हमें कहीं और नहीं जाना पड़ता।” स्कूल ने दो कैपस खोले—एक पूर्वी पालो अल्टो में, दूसरा ईस्ट बे में। 2025 में आठवीं क्लास तक पढ़ाई शुरू की। सब कुछ ठीक लग रहा था। फिर अचानक, सब खत्म। ये स्कूल सिर्फ़ इमारत नहीं था। ये एक वादा था—कि अमीर लोग गरीबों की मदद करेंगे। लेकिन जब वादे टूटते हैं, तो सिर्फ़ इमारतें नहीं, दिल भी टूटते हैं। क्या पैसा सचमुच खत्म हो गया, या ज़करबर्ग की प्राथमिकताएँ बदल गईं?

विश्वास का टूटना

उस सुबह, जब माता-पिता को स्कूल बुलाया गया, माहौल भारी था। स्कूल बोर्ड ने कहा, “ये बहुत मुश्किल फैसला है। 2026 में स्कूल बंद होगा।” बस, इतना। कोई साफ जवाब नहीं। सिलिया प्राडो, एक और माँ, गुस्से में थीं: “प्रिसिला चान को आना चाहिए था। ये उनका स्कूल है, फिर वो क्यों नहीं आईं?” एक बच्चे ने अपनी माँ, एमेलिन वैनिकोलो, से कहा, “वो आदमी जो पैसा देता था, अब नहीं देगा।” खबरें बताती हैं कि CZI ने फॉडिंग रोक दी। लेकिन क्यों? ज़करबर्ग की दौलत तो कम नहीं हुई। कुछ लोग कहते हैं, CZI अब शिक्षा पर नहीं, AI



और बायोलॉजी पर फोकस कर रही है। फरवरी 2025 में CZI ने ऐलान किया कि वो सामाजिक मुद्दों—जैसे नस्लीय समानता—से हटकर साइंस पर ध्यान देगी। क्या ये स्कूल उनकी नई प्लानिंग में फिट नहीं था?

कुछ और बातें भी सामने आईं। ज़करबर्ग ने हाल ही में ट्रूप के उद्घाटन के लिए 1 मिलियन डॉलर दिए। मेटा ने अपनी DEI (दायर्वर्सिटी, इक्विटी, इंक्लूजन) पॉलिसी खत्म कर दी। द प्राइमरी स्कूल का मिशन था गरीब और अल्पसंख्यक बच्चों की मदद। क्या ज़करबर्ग अब इन मूल्यों से पीछे हट रहे हैं? या फिर स्कूल में कोई और दिक्कत थी? कुछ रिपोर्टर्स कहती हैं कि स्कूल की पढ़ाई अच्छी नहीं थी, और दूसरे निवेशक नहीं मिले। लेकिन बिना साफ जवाब, ये सिर्फ़ अटकलें हैं।

पूर्वी पालो अल्टो के पूर्व मेयर, एंटोनियो लोपेज़, ने इसे “धोखा” बताया। “हमने उन पर भरोसा किया। उन्होंने हमारे बच्चों के सपने छीन लिए।” ये शब्द सिर्फ़ गुस्सा नहीं, बल्कि दर्द दिखाते हैं। जब अमीर लोग वादे तोड़ते

हैं, तो गरीब समुदायों का भरोसा टूटता है।
बच्चों का भविष्य, अधर में

स्कूल बंद होने से 550 बच्चों का भविष्य अनिश्चित है। न्यूबिया का बेटा, जो ऑटिज़म से ज़ूझता है, अब कहाँ जाएगा? स्थानीय रेवेन्स्वुड स्कूल डिस्ट्रिक्ट में जगह तो है, लेकिन वहाँ द प्राइमरी स्कूल जैसी सुविधाएँ नहीं। रेवेन्स्वुड में पहले 5,000 बच्चे पढ़ते थे; अब सिर्फ़ 2,000। गरीब परिवार सिलिकॉन वैली के महंगे किराए नहीं झेल पाते, और स्कूलों का बजट कम होता जा रहा है।

CZI ने 50 मिलियन डॉलर देने का वादा किया है। इसमें बच्चों के लिए 529 एजुकेशन सेविंग्स प्लान शामिल हैं—प्राइमरी के बच्चों को 10,000 डॉलर, प्री-स्कूल के बच्चों को 2,500, और छोटे बच्चों को 1,000। इसके अलावा, ट्रांजिशन स्पेशलिस्ट्स और कम्युनिटी प्रोग्राम्स के लिए फंडिंग। लेकिन माता-पिता कहते हैं, ये काफी नहीं। सिलिकॉन वैली में प्राइवेट स्कूल की फीस लाखों में

है। रेवेन्स्वुड में डॉक्टर या मेटल हेल्थ सपोर्ट नहीं। ऐडन मारकेज, एक अभिभावक, कहते हैं, “रेवेन्स्वुड अच्छा है, लेकिन हमारे बच्चों को वो खास देखभाल नहीं मिलेगी।” क्या ये 50 मिलियन डॉलर घाव पर मरहम है, या सिर्फ़ दिखावा? अगर CZI ने 2018 से 2024 तक 100 मिलियन डॉलर स्कूल को दिए, तो अब अचानक पैसा बच्चों रोका? क्या ये सिर्फ़ बिज़नेस डिसीज़न था, या कुछ और?

ज़िंदगी, वादे, और सच्चाई

ज़िंदगी एक सबक है। हम सीखते हैं कि वादे आसान होते हैं, लेकिन उन्हें निभाना मुश्किल। द प्राइमरी स्कूल ने 10 साल तक बच्चों को पढ़ाया, इलाज किया, और परिवारों को सहारा दिया। लेकिन जब वो बंद हुआ, तो सवाल उठा: क्या अमीरों की मदद सिर्फ़ एक एक्सपेरिमेंट है? ज़करबर्ग और चान ने 2015 में कहा था कि वो अपनी 99% दौलत दान करेंगे। लेकिन अगर एक स्कूल को चलाने के लिए पैसा नहीं, तो वो दान कहाँ जा रहा है?

फिलॉसफी हमें सिखाती है कि सच्ची मदद वही है जो लंबे समय तक टिके। द प्राइमरी स्कूल एक सपना था, लेकिन बिना मजबूत नींव के। पूर्वी पालो अल्टो के लोग मजबूत हैं। वो पहले भी मुश्किलों से लड़े हैं। लेकिन इस बार, घाव गहरा है। न्यूबिया अब अपने बेटे के लिए नया स्कूल ढूँढ़ रही है। उसका दिल भारी है, लेकिन उम्मीद बाकी है।

CZI को अब जवाब देना होगा। 50 मिलियन डॉलर का प्लान अच्छा है, लेकिन उसे लोगों की ज़रूरतों के हिसाब से लागू करना होगा। ज़करबर्ग को समझना होगा कि पैसा देना ही काफी नहीं—विश्वास बनाना और उसे कायम रखना ज़रूरी है। और हमें, समाज के तौर पर, सोचना होगा: क्या हम ऐसे सिस्टम चाहते हैं, जहाँ बच्चों का भविष्य एक अमीर आदमी के फैसले पर टिका हो? पूर्वी पालो अल्टो की गलियों में, बच्चे अब भी खेलते हैं। उनके हँसने की आवाज में उम्मीद है। लेकिन उनके माता-पिता के चेहरों पर सवाल हैं। क्या कोई जवाब देगा?



कैसे चीन बचा रहा है पाकिस्तान के आतंक को

Pहलगाम, जहाँ बादल पहाड़ों को गले लगाते हैं, जहाँ नदियाँ गीत गाती हैं, वहाँ 22 अप्रैल 2025 को खून की बरसात हुई। 26 मासूम, जो छुट्टियाँ मनाने आए थे, आतंक की भेट चढ़ गए। परिवार बिखर गए, सपने चूर-चूर हो गए। ये दर्द सिर्फ पहलगाम का नहीं, हिंदुस्तान के हर दिल का है। लेकिन इस घाव को और गहरा कर रहा है चीन, जो अपने “सदा का दोस्त” पाकिस्तान को बचा रहा है। अखिल क्यों? क्या है इस डबल गेम के पीछे का सच? ये कहानी है हिंदुस्तान की हिम्मत की, उसके दर्द की, और उस जज्बे की, जो हर आँधी में और चमकता है।

खून से रंगा पहलगाम

पहलगाम का नाम सुनते ही मन में शांति की तस्वीर उभरती है। हरी-भरी वादियाँ, बर्फ से ढके पहाड़, और लिहर नदी का मधुर संगीत। लेकिन उस दिन, जब सूरज ढल रहा था, आतंकवादियों ने इस स्वर्ग को नरक बना दिया। 26 लोग—जिनमें बच्चे, जवान, और बुजुर्ग थे—लाश्कर-ए-तैयबा के प्रॉक्सी, द रेसिस्टेंस फ्रंट (TRF) के हवाले हो गए। नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (NIA) ने बताया कि हमले का मास्टरमाइंड, हाशिम मूसा, पाकिस्तान का पूर्व पैरा कमांडो था। सैटेलाइट फोन, जो हमले में यूज हुए, चीनी कंपनी हुवावे के थे।

ये सिर्फ एक हमला नहीं, बल्कि एक सोची-समझी साजिश थी।

ज़रा सोचिए, एक कपल जो अपनी पहली एनिवर्सरी मना रहा था, या एक दीचर जो रिटायरमेंट के बाद पहलगाम की सैर को निकला था—उनके सपनों का क्या? उनके परिवारों का क्या? हर मृत्यु एक कहानी थी, जो अधूरी रह गई। लेकिन क्या ये दर्द सिर्फ हिंदुस्तान का है? नहीं। ये इंसानियत पर हमला है। फिर भी, पाकिस्तान ने इस हमले को “फ्रीडम फाइट” कहा, और अब “न्यूट्रल इन्वेस्टिगेशन” की माँग कर रहा है।

ये दोमुहरा रवैया हमें गुस्सा दिलाता है, लेकिन सवाल ये है—पाकिस्तान को इतनी हिम्मत कहाँ से मिल रही है? जवाब है: चीन।

हिंदुस्तान का गुस्सा, उसकी हिम्मत

जब पहलगाम में खून बिखरा, हिंदुस्तान का दिल रोया, लेकिन उसका झरादा और मजबूत हुआ। प्रधानमंत्री नंदेंद मोदी ने साफ़ कहा, “हर मासूम का बदला लिया जाएगा।” हिंदुस्तान ने तुरंत एकशन लिया। इंडस वॉटर्स ट्रीटी स्स्पेंड कर दी गई, पाकिस्तानी एयरलाइंस को भारतीय आसमान से बैन कर दिया गया, और अटारी-वाघा बॉर्डर बंद कर दिया गया। सेना को “फुल ऑपरेशनल फ्रीडम” दी गई, यानी अब आतंकियों का हिसाब होगा।

डिप्लोमेसी में भी हिंदुस्तान ने कोई कसर नहीं छोड़ी। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने साउथ कोरिया, डेनमार्क, और दूसरे UN सिक्योरिटी काउंसिल में बोला, ताकि पाकिस्तान के आतंक को दुनिया के सामने लाया जाए। X पर लोग गुस्से में हैं। @KashmirVoice ने लिखा, “पहलगाम के शहीदों को इंसाफ़ चाहिए, न कि चीन का डबल स्टैंडर्ड।” ये गुस्सा सिर्फ़ सोशल मीडिया तक नहीं, बल्कि हर हिंदुस्तानी के दिल में है। हमने पहले भी 26/11, पठानकोट, और पुलवामा देखा है। हर बार



ये अलार्म की चंदी है।

चीन का मकसद क्या है? वो चाहता है कि हिंदुस्तान साउथ एशिया के झागड़ों में उलझा रहे, ताकि वो ग्लोबल स्टेज पर चमक न सके। गलवान 2020 की झड़प हो या डेप्सांग 2013 की टेंशन, चीन हमेशा हिंदुस्तान को टेस्ट करता रहा है। अब पहलगाम हमले में उसका “न्यूट्रल” रुख़ हमें बताता है कि वो पाकिस्तान के ज़रिए हिंदुस्तान को कमज़ोर करना चाहता है। लेकिन चीन भूल रहा है—हिंदुस्तान का जज्बा स्टील से बना है।

एक नई सुबह का इंतजार

जिंदगी और मौत का फलसफ़ा हमें सिखाता है कि हर अंधेरे के बाद सुबह आती है। पहलगाम का दर्द हमें याद दिलाता है कि हमारी आजादी, हमारी शांति, कितने बलिदानों की देन है। लेकिन ये दर्द हमें कमज़ोर नहीं, बल्कि और मजबूत बनाता है। हिंदुस्तान सिर्फ़ एक देश नहीं, एक विचार है—जो नफरत के सामने कभी नहीं द्युकता।

चीन और पाकिस्तान का गठजोड़ पुराना है। चाइना-पाकिस्तान इकनॉमिक कॉरिडोर (CPEC) के ज़रिए चीन ने पाकिस्तान को अपने पाले में बाँध लिया है। लेकिन हिंदुस्तान अकेला नहीं है। अमेरिका, ब्रिटेन, और दूसरे देशों ने हमारे हक़ में आवाज़ उठाई है। हमारी डिप्लोमेसी, हमारी सेना, और सबसे ज़्यादा, हमारे लोग—सब एकजूट हैं। X पर @GeoPolityX ने लिखा, “चीन का ये गेम हिंदुस्तान को रोक नहीं सकता। हमारा वक्त आ चुका है।”

हमें चाहिए कि हम अपने शहीदों को याद करें, उनके परिवारों के साथ खड़े हों, और आतंक के खिलाफ़ इस जंग में एक हों। पहलगाम का खून हमें चीख-चीख कर कह रहा है—इंसाफ़ चाहिए। और हिंदुस्तान वो देश है, जो इंसाफ़ माँगता नहीं, लेता है। जैसे सूरज हर सुबह बादलों को चीरता है, वैसे ही हिंदुस्तान इस दर्द को पार करेगा। हमारी मिट्टी में हिम्मत है, हमारे खून में जज्बा है। ये पहलगाम की पुकार है, ये हिंदुस्तान की पुकार है।



पाकिस्तान

ने वादा किया कि वो आतंकियों पर एकशन लेगा, लेकिन हर बार वो झूठा निकला। अब हिंदुस्तान का सब्र टूट चुका है। लेकिन इस जंग में एक और प्लेयर है—चीन, जो पाकिस्तान के पीछे खड़ा है।

चीन का डबल गेम

चीन ने पहलगाम हमले की निंदा तो की, लेकिन उसका “फैयर इन्वेस्टिगेशन” वाला बयान हिंदुस्तान के लिए नमक-मिर्च जैसा है। जब दुनिया आतंक के खिलाफ़ एकजुट हो रही थी, चीन ने UN सिक्योरिटी काउंसिल में एक सख्त स्टेटमेंट को कमज़ोर कर दिया, ताकि पाकिस्तान पर सीधा इल्जाम न आए। ये वही चीन है, जो अपनी उड़िगर प्रॉब्लम के लिए पूरी दुनिया से सपोर्ट माँगता है, लेकिन जब बात लश्कर-ए-तैयबा जैसे आतंकियों की आती है, तो वो पाकिस्तान को बचाने लगता है। याद कीजिए, कैसे चीन ने UN में मसूद अज़हर को ग्लोबल टेररिस्ट डिक्लेयर होने से सालों तक रोका।



और सिर्फ़ डिप्लोमेसी ही नहीं, हुवावे के सैटेलाइट फोन और हाल के साइबर अटैक्स, जिनमें चीनी सॉफ्टवेयर का ज़िक्र है, ये सवाल उठाते हैं कि क्या चीन सिर्फ़ डिप्लोमैटिकली ही नहीं, बल्कि टेक्नॉलॉजी से भी पाकिस्तान को सपोर्ट कर रहा है? कुछ X यूज़र्स, जैसे @DefSecAnalyst, ने तो ये भी कहा कि चीनी ड्रोन और इनक्रिप्टेड सिस्टम्स भी हमले में यूज़ हुए। भले ही ये क्लोम्स अभी कन्फर्म नहीं हैं, लेकिन हिंदुस्तान के लिए



प्रभु कृपा दुष्ट निवारण समाप्ति

BY

Arihanta
Industries

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML



15 ML



ULTIMATE
HAIR
SOLUTION

NO ARTIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries